चन्दामामा
नवम्बर १९७९

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ!
2
3 4
4
6 ?
6
9 12
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेज़ी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : 14-12-1979
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"Fun with Gems", Dept. No. E-8
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra.
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN

पक्षी देखो! देश पहचानो!

ये पक्षी कौन से देश में सबसे ज्यादा पाए जाते हैं?

1

2

3

बच्चों की मुस्कान-
राष्ट्र की शान

Happy Child-
Nation's Pride

विश्व बाल वर्ष 1979

International
Year of the Child.

4

5

6
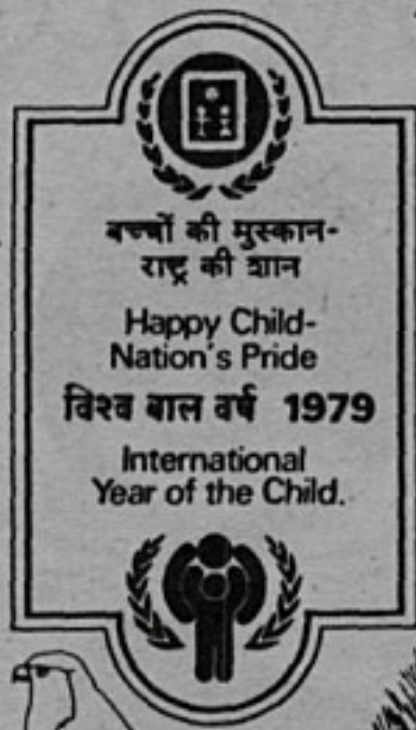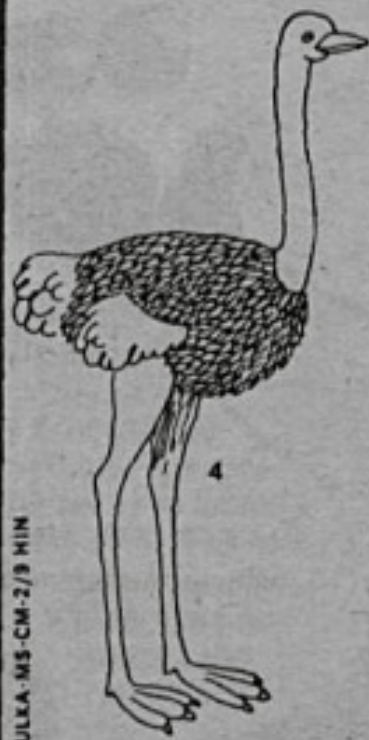
ULKA-MS-CM-2/9 HIN

माइनर्स सेविंग्स खाता खोलिए

बचत एक अच्छी आदत है

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

(भारत सरकार उपक्रम)

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

प्रिय पाठको,

आप सब ने प्रारंभ से ही चन्दामामा का हृदय से स्वागत किया और लगातार तीस वर्षों से इसे प्रेम से अपनाया। चन्दामामा की लोक प्रियता में आप सब का सहयोग सराहनीय है। इसे सर्वाधिक लोक प्रिय व रुचिकर बनाने के लिए हम अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहे हैं। इस वास्ते हमने चन्दामामा के इस अंक में बीच के पृष्ठों में एक प्रश्नावली दी है। कृपया आप सब यथा शीघ्र अपने उत्तर हमारे पास पहुँचाने का कष्ट करें ताकि हम इसे और सुंदर और सुरुचिपूर्ण बनाकर आपका मनोरंजन एवं ज्ञानवर्द्धन करने में पूर्वाधिक सफलता प्राप्त कर सकें।

वर्ष : ३२ नवम्बर १९७९ अंक : ३

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

प्र: वैज्ञानिकों का कहना है कि हम आसमान में ऊपर जाते हैं, वहाँ पर प्राणवायु नहीं है, प्राणवायु के बिना आग जलती नहीं, तब आग का गोला सूर्य कैसे प्रकाशमान है?

उ: इस प्रश्न के अन्दर दो भ्रम हैं; एक, आसमान में ऊपर जाने पर हवा पतली हो जाती है, उसके साथ हवा में व्याप्त प्राणवायु भी घट जाती है। दूसरी बात, पृथ्वी के चारों ओर व्याप्त वायु की परत कुछ सैकड़ों मीलों को पार नहीं करती। इसलिए लाखों मीलों की दूरी पर स्थित सूर्य के जलने के लिए पृथ्वी पर से प्राणवायु का पहुँचना असंभव है। तीसरी बात यह है कि ज्वलन और प्रज्वलन की क्रियाएँ भिन्न हैं। जलने (ज्वलन) के लिए प्राणवायु की जरूरत होती है, पर प्रज्वलन के लिए नहीं। बिजली की बत्तियों में लोहे के तार जलते हैं पर प्रज्वलित नहीं होते। जो ज्वलित होती हैं, वे चीजें प्रज्वलन की क्रिया की समाप्ति पर राख हो जाती हैं। भाती में जलाने पर लोहा लाल हो जाता है, और अधिक जलाने पर पीला बनकर "पानी" भी बन जाता है। सूर्य के भीतर का पदार्थ कई हज़ार डिग्री उष्णता के साथ प्रज्वलित होता है। कहा जाता है कि प्रज्वलन के लिए आवश्यक उष्णता अणुशक्ति से प्राप्त होती है। इसलिए सूर्य के भीतर कोई भी चीज जलती नहीं है।

प्र: अगर हम विमान में सीधे आसमान में पृथ्वी की चुंबक सीमा को पार कर उड़े और वहाँ १२ घंटे रहकर सीधे नीचे की ओर लौटे तो क्या हम एक दूसरे प्रदेश में उतर जाते हैं या जहाँ से निकलते हैं, वहीं उतर जाते हैं?

उ: पृथ्वी की चुंबक सीमा को पार करने के लिए कोई भी विमान काम नहीं दे सकता। इसके लिए मंजिलवाले राकेटों की जरूरत होती है। पृथ्वी की चुंबक सीमा को पार करने के बाद संभवत: हम चन्द्रमा की चुंबक शक्ति के शिकार हो जाते हैं। बारह घंटे बाद शायद हम चन्द्रमा के चारों तरफ़ चक्कर लगाते अपने को पायेंगे। फिर से अगर हम पृथ्वी पर आना चाहे तो चन्द्रमा की चुंबक शक्ति से बाहर आने के लिए हमें फिर से राकेटों की जरूरत पड़ेगी।

[७६]

इसके बाद उन शिक्षित मूर्खों ने दो जानवरों को जोड़कर चलाने का प्रयत्न किया तो वे हिले नहीं; इसलिए उन पंडितों ने अपने गुरु के कहे अनुसार गधे को चलाने के लिए उसे खूब पीटा। वह रेंकने लगा। ऊँट भी भड़ककर चिल्ला उठा। उनकी चिल्लाहटें सुनकर गधे का मालिक धोबी और ऊँट का मालिक व्यापारी वहाँ दौड़े आ पहुँचे, असली हालत समझकर उन पंडितों पर लाठियाँ बरसाईं, वे मार खाकर भाग गए।

इस पर एक पंडित ने हाँफते हुए पूछा–"हम लोगों को इन दोनों ने पीटा है। आखिर इसके पीछे उनका क्या उद्देश्य होगा?" दूसरे ने उत्तर दिया–"वे दोनों मूर्ख हैं। इसलिए पंडितों के कार्य को वे समझ न पाये।"

इसके बाद वे चारों आगे बढ़े। रास्ते में एक गहरी नदी आ पड़ी। उसमें मोथा उगा था। नदी के बीच एक पत्ता बहा चला जा रहा था। उसे देख एक पंडित ने सोचा–"आगमिष्यति यत्पत्रं तदस्मां स्तारयिष्यति" (वह आनेवाला पत्र नदी को पार करायेगा।) यों सोचकर वह नदी में कूद पड़ा, कंठ तक धंसकर नदी से बाहर निकल न पाया।

तब एक दूसरे पंडित ने अपनी पुस्तक निकाल कर पढ़ा–"सर्वनाशे समुत्पन्ने, अर्धं त्यजति पंडितः" (जब सर्वस्व नष्ट हो जाता है, तब बुद्धिमान व्यक्ति आधा ही तो बचा लेता है।) यों कहा गया है, इसलिए उसने मोथे के बीच फंसे व्यक्ति का सर काटकर ले लिया। वह सर बोलने की स्थिति में न था, इसलिए उसे

नदी के किनारे ही छोड़ दिया, फिर भी वह नदी पार नहीं कर सकता था, इस कारण एक दूसरी दिशा से चलकर एक गाँव में पहुँचे।

उन्हें पंडित जानकर तीन गृहस्थों ने उन्हें अपने घर खाने के लिए बुलाया।

प्रथम पंडित को धागों जैसे लगनेवाली सेंवई घी में तलकर परोसी गयी। उसे देख उस मूर्ख ने सोचा–"दीर्घ सूत्री विनश्यति" अर्थात धागे नाशकारक होते हैं। यों सोचकर खाये बिना चला गया।

दूसरे के पत्तल में चपाती जैसी चौड़ी चीजें परोसी गईं। उसे देख उस मूर्ख ने सोचा–"अति विस्तार विस्तीर्णं तद्भवेन्न चिरायुषं" (ज्यादा चौड़ी चीजें चिरायु कारक नहीं होतीं) यों विचार कर बिना भोजन किये वह भी चला गया।

तीसरे पंडित को बड़े परोसे गये। बड़ों के बीच छेद देख उसने सोचा–"छिद्रेष्वनर्था बहुली भवंति" (छिद्रों के कारण अनेक अनर्थ होते हैं।) यों सोचकर वह भी बिना खाये चला गया।

इस प्रकार जो लोग पंडित के नाम से आदर प्राप्त कर चुके थे, वे लौकिक ज्ञान के अभाव में मूर्ख बनकर मजाक़ के कारण बन गये।

अत्यंत लोभी ने यह कहानी सुनकर कहा–"तुम्हारा कहना सच है, पर मेरी दृष्टि में मानवों के सुधरने व बिगड़ने का कारण पांडित्य नहीं है, और न लौकिक ज्ञान ही। बिलकुल असहाय और अनाथ व्यक्ति भी अकसर ईश्वर की कृपा से जी जाते हैं। अत्यंत शक्तिशाली और सुरक्षा प्राप्त व्यक्ति भी अचानक मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। बीच जंगल में मरने के वास्ते छोड़ दिया गया व्यक्ति भी ईश्वर की कृपा हो तो बच जाता है। लेकिन समस्त प्रकार की सुविधाओं के होते हुए भी ईश्वर का अनुग्रह न होने पर अपने ही घर मर जाता है। सहस्रबुद्धि, शतबुद्धि और एकबुद्धि नामक व्यक्तियों की

कहानियों से यह मालूम होता है कि अपने से भी ज्यादा दो मेधावियों के मरने पर क्या एकबुद्धि बच न निकला? यह मेरे कथन का प्रमाण नहीं है! इस संसार में मानव के प्रारब्ध का निर्णय करनेवाली वस्तु विधि है, पर लोभ या लौकिक ज्ञान का अभाव नहीं है।"

इस पर अतिलोभी ने पूछा—"वह कैसी कहानी है?" तब अत्यंत लोभी ने यों सुनाया: एक तालाब में सहस्रबुद्धि और शतबुद्धि नामक दो मछलियाँ रहा करती थीं। उसी में एकबुद्धि नामक एक मेंढ़क था, जिसके साथ उनकी दोस्ती थी। वे प्रति दिन शाम को तालाब के किनारे मिलते और बातचीत करके फिर तालाब में चले जाते थे।

एक दिन शाम को जब वे तीनों बात कर रहे थे, तब कुछ मछुए अपने हाथों में जाल लिये उधर आ निकले। मछुओं ने कहा—"इस तालाब में पानी घट गया है, पर मछलियाँ ज्यादा हैं इसलिए हम कल सुबह आकर मछलियाँ पकड़ लेंगे।" यों निश्चय कर वहाँ से चले गये।

यह भयानक समाचार सुनकर तीनों मित्रों ने अपने कर्तव्य पर विचार किया।

मेंढ़क ने पूछा—"दोस्त सहस्रबुद्धि और शतबुद्धि! अब हमें क्या करना है? क्या

हम यहाँ से कहीं भाग जायें या नहीं?" इस पर सहस्रबुद्धि ने मुस्कुराकर कहा—"दोस्त! तुम उड़ती खबरें सुनकर घबराओ मत! साँप तथा दुष्ट लोग जो विचार करते हैं, वे कभी सफल नहीं होते! इसीलिए दुनिया चलती है। ये मछुए शायद कल सवेरे इस ओर न आवे। अगर आये भी तो मैं अपनी बुद्धि की चातुरी से अपनी रक्षा करने के साथ तुम्हारी भी रक्षा करूँगी। मैं अच्छी तरह से जानती हूँ कि पानी के अन्दर हम कितने प्रकार से संचार कर सकती हैं?"

शतबुद्धि ये बातें सुन खुश हो बोली—"सहस्रबुद्धि ने खूब कहा। बुद्धिमान

लोगों के लिए इस संसार में असंभव कार्य कोई नहीं है। अस्त्रधारी नंदों को चाणक्य ने क्या अपनी बुद्धिचातुरी से निर्मूल नहीं बनाया? जहाँ वायु और सूर्य तक प्रवेश नहीं कर पाते, वहाँ बुद्धि प्रवेश कर पाती है। इसलिए हमें इन मछुओं की बातों पर घबरा कर अपने जन्मस्थान तथा अपने दादा-परदादाओं के प्रदेश इस तालाब को छोड़कर दूसरी जगह जाना नहीं चाहिए। जन्मस्थान में अगर हमें थोड़ा भी सुख मिले, स्वर्ग सुख से भी कहीं अधिक होता है। क्या यह बात हमारे बुजुर्गों ने झूठ-मूठ बताई है? इस कारण हमें इस तालाब को छोड़ अन्यत्र नहीं जाना है। मैं अपने बुद्धिबल से तुम्हारी रक्षा करूँगी?"

इस पर मेंढ़क बोला—"दोस्तो, मैं तो सिर्फ़ एकबुद्धि वाला हूँ! मेरी बुद्धि मुझे तुरंत इस स्थान को छोड़कर चले जाने को बता रही है। मैं अपनी पत्नी के साथ आज ही दूसरे तालाब में चला जाऊँगा।"

दूसरे दिन मछुए आ धमके। जाल बिछाकर तालाब की सभी मछलियों को जाल में फँसाया। मछलियों के साथ उन्हें कछुए, मेंढ़क, केकड़े आदि अन्य जलचर भी हाथ लगे। सहस्रबुद्धि तथा शतबुद्धि ने अपनी पत्नियों के साथ बचने के लिए अपनी सारी कुशलता का उपयोग किया, लेकिन आखिर कोई फ़ायदा न रहा।

मछुओं को जो कुछ प्राणी हाथ लगे, उन से संतुष्ट हो दुपहर को अपने अपने घरों की ओर चल पड़े। शतबुद्धि भारी थी, इसलिए एक मछुए ने उसे अपने कंधे पर उठाया, पर सहस्रबुद्धि को एक डंडे में लटका कर दो मछुए ढोते हुए ले गये।

एकबुद्धि ने अपने नये स्थानवाले तालाब में से उन मछुओं को अपने दोस्तों को उठाकर ले जाते देखा और अपनी पत्नी से बोला—"प्रिये, क्या तुमने देखा? जहाँ सहस्रबुद्धि और शतबुद्धि को मछुए ढोकर ले जा रहे हैं, वहाँ एकबुद्धि मैं निश्चित हो पानी में तैर रहा हूँ।"

भल्लूक मांत्रिक

[१६]

[भल्लूक मांत्रिक राजा दुर्मुख को क्षमा करके माया मर्कट की खोज में चला जाता है। अंग रक्षक सूचना देते हैं कि माया मर्कट मंत्री जीवदत्त के पास है। तब कालीवर्मा के साथ मांत्रिक भी उस ओर रवाना हो जाता है। इस बीच राक्षस उग्रदण्ड मर्कट पर गदे का प्रहार करता है, पर वह घोड़े पर से उछलकर ऊपर उड़ जाता है। बाद...]

माया मर्कट गदे के प्रहार से बचकर ऊपर उड़ा, इसे देख उग्रदण्ड अपने क्रोध पर क़ाबू न कर सका। उसने पुनः मर्कट पर प्रहार करना चाहा, लेकिन इस बीच चोट खाया हुआ घोड़ा हिनहिनाते जाकर दूसरे घोड़े से जा टकराया। उस आघात से घोड़े पर सवार सैनिक नीचे जा गिरा। माया मर्कट ने बिजली की गति के साथ उस घोड़े पर सवार हो लगाम खींची और घोड़े को नगर की ओर तेज गति से दौड़ाया।

इस बीच उग्रदण्ड गदा उठाकर मर्कट के पीछे दौड़ पड़ा, तब तक माया मर्कट अपने घोड़े को दौड़ाकर जीवगुप्त के समीप पहुँचा और उस से बोला—"जीवगुप्त! तुम न मालूम कैसे मंत्री हो? तुम्हारी एक भी चाल अब तक सफल न हुई! मैं अभी चन्द्रशिला नगर पहुँचकर राजा

जितकेतु को यहाँ का सारा वृत्तांत सुनाऊँगा और नगर की रक्षा का समुचित प्रबंध करवा दूंगा।"

मंत्री जीवगुप्त दुर्ग के भीतर से अपनी ओर बढ़नेवाले भल्लूक मांत्रिक तथा कालीवर्मा को देख थर-थर कांप उठा और बोला—"माया मर्कट! थोड़ा रुक तो जाओ! महान बलवान राक्षस और मांत्रिक जैसे लोगों से नगर को कौन बचा सकता है? मेरी बात सुनो! फिलहाल हम जंगल में भाग जायेंगे।"

"मंत्री महोदय! यह तो कायरों का काम है। मुझे तो सब से पहले राजा जितकेतु से मिलना है। इसके बाद ही भल्लूक मांत्रिक तथा कालीवर्मा का अंत करने का उपाय सोचूंगा।" ये शब्द कहते माया मर्कट ने अपने घोड़े को नगर की ओर दौड़ाया।

राक्षस उग्रदण्ड एक बार दांत किट-किटाकर गरज उठा—"अबे मंत्री! तुम्हारे साथ देनेवाले सैनिकों और सामंत सूर्य भूपति के साथ मेरी किसी प्रकार की दुश्मनी नहीं है। कालीवर्मा को फांसी के तख्ते पर चढ़वाने की योजना बनाकर तुम्हीं इस सारी गड़बड़ी के कारणभूत बन गये हो। सब से पहले तुम्हें उचित दण्ड देना है। तुम घोड़े पर से उतर जाओ।"

उग्रदण्ड की बात पूरी होने के पहले ही मंत्री जीवगुप्त घोड़े को एड़ लगाकर बोला—"मेरे सैनिको! यह राक्षस हमें कच्चा चबा डालेगा। इसलिए जो लोग जान का मोह रखते हैं, वे सब मेरे पीछे चलो।" यों कहकर वह नगर की ओर चल पड़ा।

इस पर सामंत सूर्यभूपति और सैनिक भी मंत्री का अनुसरण करने लगे। तब उग्रदण्ड ने अपनी पकड़ में आये हुए एक घोड़े की पिछली टांगें पकड़कर खींच दिया जिससे घोड़े पर सवार सैनिक नीचे गिर पड़ा। उग्रदण्ड उस सैनिक की गर्दन

पकड़कर उसे ऊपर उठाते बोला–"अबे, लगता है कि तुम्हारे हाथ-पैर टूटे नहीं हैं। तुम इधर जंगल में चले जाओ, इसी में ही तुम्हारी जान की खैरियत है। नाहक़ तुम अपनी जान क्यों गँवा बैठते हो?"

इस बीच वहाँ पर भल्लूक मांत्रिक और कालीवर्मा आ पहुँचे। कालीवर्मा नगर की ओर भागनेवाले जितकेतु के सैनिकों की ओर देख बोला–"उग्रदण्ड! तुमने मंत्री के साथ सारे सैनिकों को छोड़कर इस कमबख्त सैनिक को पकड़ लिया। तुम्हें तो जीवगुप्त को भागने देना नहीं चाहिए था?"

भल्लूक मांत्रिक निराश भरे स्वर में बोला–"उस मूर्ख मंत्री की बात ही क्या है? मगर मेरा मंत्र दण्ड चुरानेवाले माया मर्कट को बन्दी बना पाता, तो मुझे बड़ी खुशी होती।"

इसके बाद राक्षस उग्रदण्ड जमीन पर लुढ़क पड़ा, अपने गदे को दूर फेंककर बोला–"भल्लूक मांत्रिक! मैंने उस माया मर्कट के द्वारा बड़ी बुरी खबर सुनी। वह कह रहा था कि तांत्रिक मिथ्या मिश्र ने मेरे भाई का वध कर डाला है। क्या यह बात विश्वास करने योग्य है?"

"तुम्हारे भाई का क्या नाम है?" भल्लूक मांत्रिक ने पूछा।

"मेरे भाई का नाम कालदण्ड है। क्या तुमने कभी यह नाम सुना है? उनका निवास भी हिमालयों में भल्लूकपाद पर्वतों के प्रदेश में ही है।" उग्रदण्ड ने उत्तर दिया।

भल्लूक मांत्रिक थोड़ी देर तक गंभीरता पूर्वक सोचता रहा, फिर अस्वीकार सूचक सर हिलाकर बोला–"उग्रदण्ड! मैंने सुना है कि उस तांत्रिक ने मेरे गुरु का अंत करने के लिए कोई दल तैयार कर रखा है। कुछ लोगों को उसने अपनी तांत्रिक शक्तियों द्वारा बन्दी बनाकर छोड़ रखा है और उनसे बेगारी ले रहा है। मैंने कालदण्ड नामक राक्षस का नाम आज

अंत करने में तुम्हारी मदद करूँगा।" ये बातें सुन भल्लूक मांत्रिक के साथ कालीवर्मा भी बहुत खुश हो गये। तब उग्रदण्ड से बोले–"उग्रदण्ड! हम लोग शीघ्र ही यहाँ से रवाना होकर उन भल्लूकपाद पर्वतों में पहुँच जायेंगे। लेकिन इससे पूर्व हमें माया मर्कट के हाथ से मंत्र दण्ड को पुनः प्राप्त करना होगा। दुष्ट जितकेतु राजा को उचित रूप में दण्ड देना होगा।"

इसके दूसरे ही क्षण बधिक भल्लूक हाथी पर से चिल्ला उठा–"सिरस भैरव की जय!" तब आगे रहकर वह नगर की ओर चल पड़ा।

इस बीच घोड़े पर चन्द्रशिला नगर की ओर तेजी के साथ जानेवाला माया मर्कट नगर के द्वार पर पहुँचा। वहाँ के दो पहरेदार मर्कट को देख आश्चर्य में आ गये और बोले–"अरे इस विचित्र मर्कट का घुड़ सवारी करना कैसा?" यों कहते अपनी तलवारों से उसे रोककर फिर बोले–"अरे, खेल का बन्दर! क्या तुम बात करना जानते हो?" इन शब्दों के साथ वे बंदर की पूँछ पकड़ने को आगे बढ़े।

माया मर्कट जोर से किचकिच कर उठा और बोला–"अरे कमबख्त पहरेदारो! मैं

तक नहीं सुना है। लेकिन एक बात याद रखो, तुम कभी माया मर्कट की बातों पर यक़ीन न करो।"

उग्रदण्ड ने एक बार अंगडाई ली, फिर खड़े होकर इतमीनान से बोला–"मेरा विश्वास है कि मेरे भाई ज़िंदा होंगे। आज से कुछ साल पहले ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों में पहुँचते तांत्रिकों से डरकर मैं इन जंगलों में भाग आया हूँ। उनके मंत्र-तंत्रों के सामने मेरा यह पत्थरवाला गदा किसी काम का नहीं है। तुम बताते हो कि मंत्र-तंत्रों की शक्तियों में तुम्हारे गुरु बेजोड़ हैं। मैं भी तुम्हारे साथ उन प्रदेशों में आकर उन दुष्टों का

खेल का बंदर नहीं हूँ! मंत्र-शक्तियाँ रखनेवाला तांत्रिक भ्रांतिमति हूँ। मेरे सामने से हट जाओ। मैं तुम्हारे महाराजा को एक बहुत बड़े खतरे से बचाने जा रहा हूँ।" यों कहते मर्कट ने घोड़ को एड़ लगाया।

पहरेदारों में से एक ये बातें सुन एक दम अचरज में आ गया और वह दो क़दम पीछे हट गया। मगर दूसरा पहरेदार हिम्मत करके मर्कट के सिर की ओर अपनी तलवार का निशाना बनाकर बोला— "मैं नहीं जानता कि तुम तांत्रिक हो या मांत्रिक? तुम अभी मेरे साथ हमारे सरदार के पास चले आओ।" यों कहकर वह घोड़े की लगाम पकड़ने को हुआ।

इस पर माया मर्कट ने अपने हाथ के मंत्र दण्ड से पहरेदार की तलवार को हटाया, तब मंत्र-दण्ड के स्पर्श से वह तलवार बिजली की भांति एक बार चकाचौंध कर गई और दूसरे ही क्षण तिनके की भांति भभककर जलकर भस्म हो गई।

इस अद्भुत को देख दोनों पहरेदार चीखकर बगल की ओर हट गये। तब माया मर्कट "तांत्रिक गुरु की जय!" पुकारते घोड़े को क़िले का द्वार पार कराकर राजपथ पर पहुँचा।

नगर द्वार के थोड़ी दूर पर दीवार के पास थोड़े और पहरेदारों के साथ बातचीत करनेवाला सरदार पहरेदारों की चीख़

सुनकर चौंक पड़ा। उसने सर घुमाकर देखा–माया मर्कट तेजी के साथ घोड़े पर बढ़ता चला आ रहा है। तत्काल वह तलवार खींचकर समीप के घोड़े की ओर दौड़ते बुलंद आवाज़ में पुकार उठा– "सुनो, शत्रु राजा का कोई भेदिया बंदर के वेष में नगर पहुँचकर हमारे रहस्यों का पता लगाना चाहता है। तुम लोग उसका पीछा करके पकड़ लो।"

पहरेदारों का सरदार जब अपने घोड़े पर सवार हो वहाँ से चल पड़ा, तब तक माया मर्कट राजपथ से होकर आगे बढ़ते राजमहल के समीप पहुंच रहा था। उस वक़्त राजमहल के सामनेवाले मैदान में एक हट्टा-कट्टा जंगली मदारी पालतू बंदरों तथा भालुओं को खिलाते वहाँ पर इकट्ठी जनता का मनोरंजन कर रहा था।

माया मर्कट को एक घोड़े पर उनकी ओर बढ़ते देख नगर के कुछ लोग उत्साह में आ गये, और तालियाँ बजाते चिल्लाने लगे–"अहो, हे बंदर सवार! यह कौन मदारिया है?"

जानवरों को खिलानेवाले मदार ने माया मर्कट को देख सोचा कि यह कोई खेल में प्रशिक्षण पाया हुआ बंदर है और अपने मालिक की आँखों में धूल झोंककर भाग आया है, वह झट से आगे बढ़ा और अपने फंदे को माया मर्कट के कंठ की ओर निशाना लगाकर फेंक दिया। पर कंठ का निशाना चूक गया और मर्कट की कमर से छूकर कस गया। फिर क्या था, मर्कट घोड़े पर से पल्थियाँ मारते जमीन पर जा गिरा। उस वक़्त मर्कट के हाथ का भल्लूक मांत्रिक का मंत्र दण्ड उछलकर दूर जा गिरा।

मदारिया उत्साह से भर उठा, माया मर्कट के निकट जाकर उसके दोनों कान पकड़कर ऊपर उठाया, बोला–"अरे, किच किच भाई! इस पल से मैं तुम्हारा मालिक हूँ! तुम मेरी बात न मानोगे तो तुम्हारी

पूंछ में तेल से भीगे कपड़े लपेटकर आग लगा दूंगा।"

माया मर्कट ने दांत किटकिटाते एक बार चारों ओर नज़र दौड़ाई, तब बोला–"अरे भीख माँगनेवाले कमबख्त जादूगर! मैं मामूली बंदर नहीं हूँ। अद्भुत शक्तियाँ रखनेवाला तांत्रिक हूँ। मैं तुम्हारे राजा के पास देश पर होनेवाले खतरे की सूचना देने जा रहा हूँ। तुम क्या इस बीच मेरा यों अपमान करते हो? मैं तुम्हारा सिर कटवा डालूंगा। अरे, मेरा मंत्र दण्ड कहाँ पर है?" यों चिल्लाकर उसने क्रोध से देखा।

ये बातें सुनने पर मदरिया डर के मारे कांप उठा। दो क़दम पीछे हटा, गर्दन में लोहे की जंजीर से बंधे अपने पालतू भालू को आगे की ओर खींचते सोचने लगा–"यह तो कोई पहाड़ी पिशाच बंदर जैसा मालूम होता है। एक जानवर को वश में करने के लिए दूसरा जानवर ही बखूबी काम दे सकता है।" यों विचार कर उसने भालू को माया मर्कट की ओर उकसाया।

इस पर भालू ताल ठोंककर मुँह बाये बिजली की गति से मर्कट पर कूद पड़ा। माया मर्कट चीत्कार करते बोला–"मैं राजा जितकेतु की मदद करने आया हूँ। उन्हें भल्लूक मांत्रिक के द्वारा खतरा पैदा होनेवाला है। महाराजा इस वक़्त कहाँ पर हैं? मेरा मंत्र दण्ड कहाँ है?" यों कहते भालू की पकड़ में से अपने को बचाने की कोशिश करते हुए अपने तेज दांतों से उसे काटने लगा।

वहाँ पर इकट्ठी जनता माया मर्कट की बातों पर कोई ध्यान दिये बिना कहने लगी–"वाह! यह बंदर तो मनुष्यों की बोली जाननेवाला है। क्या तुम लोगों ने कभी ऐसा अद्भुत देखा है?" यों कहकर सीटियाँ बजाते सभी लोग एक साथ तालियाँ बजाने लगे।

इस बीच वहाँ पर पहरेदारों का सरदार तेजी के साथ घोड़े पर आ पहुँचा, बोला–

"यह कैसा मजाक़ है?" यों कहकर तलवार खींचते मदारिये से बोला–"अरे, वेष बदलकर आये हुए दुश्मन के गुप्तचर को तुम अपने पालतू भालू के हाथों से मरवा डालना चाहते हो? खबरदार! पहले इस गुप्तचर को प्राणों के साथ बंदी करके राजा की सेवा में हाज़िर करना होगा।"

पहरेदारों के सरदार के मुंह से ये बातें निकलते ही मदरिया झट से आगे बढ़ा और भालू की जंजीर पकड़कर पीछे की ओर खींचा। माया मर्कट घावों की वजह से कराहते बोला–"मैं सचमुच तुम्हारे राजा को बचाने आया तो तुम लोग मेरा अपमान करते हो? और मुझे दुश्मन का भेदिया समझते हो? मैं तो राजा का हितैषी हूं। मुझ पर यक़ीन करो; अगर वे ज़िंदा रहना चाहते हैं तो तुम्हारे राजा को ही मेरे पास आ जाने को कह दो। हां, यह बताओ, मेरा मंत्र दण्ड कहां पर है?"

माया मर्कट की ये बातें सुन पहरेदारों का सरदार दांत भींचकर बोला–"अरे दुश्मन के गुप्तचर! हमारे महाराजा को तुम्हारे पास आना होगा? कमबख्त कहीं का? तुम यह स्वांग मच रचो!" यों डांटकर फिर मदारिये से बोला–"अरे मदारिये! तुम अपने भालू से उसको पकड़वाकर इस बंदर भेदिये को मेरे पीछे राजा के पास ले आओ।" यों कहकर वह राजमहल की ओर चल पड़ा।

मदारिये की चेतावनी पाकर भालू ने बिजली की गति से जाकर माया मर्कट को कसकर पकड़ लिया, अपने कंधे पर डाल अपने मालिक के पीछे राजमहल की ओर चल पड़ा। लोग उमंग में आकर चिल्लाते और तालियां बजाते हुए उनका अनुसरण करने लगे।

माया मर्कट किचकिच करते चिल्लाने लगा–"हे मेरे तांत्रिक गुरु! तुम्हीं बचाओ! अरे, मेरा मंत्र दण्ड कहां पर है?"

(और है)

अनोखा रिश्ता

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, मनुष्य बदलते हैं, उनकी क़िस्मत भी बदल जाती है, मगर इन परिवर्तनों के कारणों की कल्पना करना नामुमक़िन मालूम होता है। इसके उदाहरण के रूप में आप को मैं सोमनाथ नामक एक असमर्थ युवक की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा: सोमनाथ अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र है। मगर वह अपने पिता के कामों में किसी भी तरह से मदद न देता। सारा दिन भटकता रहता और खाने के वक़्त घर पहुँच जाता। माँ ने उसे कई प्रकार से समझाया, उसे एक जिम्मेदार आदमी

बेताल कथाएँ

बनाना चाहा, लेकिन माँ की बातें उसके दिमाग में घुसी नहीं। एक दिन पिता ने उसे डांटा-फटकारा। पर सोमनाथ की समझ में न आया कि आखिर उसका दोष ही क्या है? इसलिए रोष में आकर उसने घर छोड़कर कहीं चले जाने का निश्चय किया।

वह दिन-भर चलता रहा, लेकिन उसे सुध मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है और उसका लक्ष्य क्या है? चलते-चलते वह थक गया। उसके पैर सूज गये। भूख-प्यास से वह परेशान हो गया। जहाँ भी उसे पानी दिखाई देता, भर पेट पानी पीकर अपनी भूख को शांत करने की कोशिश करने लगा।

चलते-चलते आखिर सोमनाथ एक जंगल में पहुँचा। अंधेरा फैल गया। एक जगह बीच जंगल में उसे किसी देवी का उजड़ा हुआ मंदिर दिखाई पड़ा। भूख के मारे उसकी आँखें चकरा रही थीं, उसे लगा कि उसने घर छोड़कर बड़ी बेवकूफ़ी की है। यह भी उसे मालूम हुआ कि अपनी जिम्मेदारी उसने अपने घर और पिता पर कैसे छोड़ रखी थी? वह उन पर कैसे आधारित था।

उसी वक़्त वहाँ पर एक बैल गाड़ी आकर रुकी। गाड़ी से एक बूढ़ा आदमी हांफते उतर पड़ा। सोमनाथ को देख बोला–"बेटा, मेरी साँस फूलती जा रही है। बैलों को खोलकर उन्हें चारा डाल दो।"

सोमनाथ ने गाड़ी से बैलों को खोल दिया, पेड़ से बांधकर चारा डाला। इसके बाद उन दोनों में बातचीत शुरू हुई।

उस वृद्ध का नाम रंगनाथ था। उसने अपना सारा वृत्तांत सोमनाथ को सुनाकर कहा–"बेटा, तुम्हें देखने पर मेरे पुत्र की मुझे याद आती है। बचपन में ही उसकी माँ मर गई। मैंने ही उसे अपने हाथों से पाल-पोसकर बड़ा किया। उसको लेकर मेरे मन में बड़ी-बड़ी आशाएँ थीं। मगर वह बिगड़ता गया। सब तरह की बुरी

लतों का शिकार हो गया। भयंकर अपराध, अन्याय और अत्याचार किये। आख़िर राजा के सिपाहियों से डरकर कहीं भाग गया। तब से आज तक उसका कोई अता-पता नहीं है।"

"जो कुछ हुआ है, उसकी आप चिंता मत कीजिएगा। कभी न कभी आप का बेटा अपनी करनी पर पश्चात्ताप करके घर लौट आएगा।" सोमनाथ ने समझाया। क्यों कि घर छोड़ने के बाद सोमनाथ का मन भी बदल गया था।

"बेटा, तुमने लाख टके की बात कही। तुम्हारे जन्म देनेवाले माता-पिता न मालूम कैसे पुण्यात्मा हैं?" ये शब्द रंगनाथ कह ही रहा था कि उसे खांसी का दौर आया। आख़िर बड़ी मुश्किल से बोला-"बेटा, मैं अब ज़्यादा देर ज़िंदा नहीं रहूँगा। मेरी मौत यहाँ पर इस जंगल में होनी थी। संपत्ति के नाम मेरे पास जो कुछ है, वह यह गाड़ी और बैल ही। मेरे मरने के बाद तुम इन गाड़ी और बैलों को बेचकर मेरा कर्मकांड पूरा करो। बेटा! श्रीनिवासपुर में मेरे गंगादास नामक एक दोस्त है। उसे यह खबर सुनाकर उसकी मदद पाओ!" यों कहकर रंगनाथ ने अपने प्राण त्याग दिये।

सोमनाथ ने सवेरा होते ही समीप में एक गड्ढा खोदा, उसमें लाश को दफ़ना दिया, गाड़ी पर जल्द ही एक गाँव में पहुँचा। गाँव के बाहर एक कुएँ के पास

बैलों को पानी पिलाया और घास चरने के लिए बैलों को खोल दिया। कुएँ के दूसरी तरफ़ बेर का एक झाड़ था। उसमें खूब फल लगे थे। अपनी भूख मिटाने के लिए सोमनाथ बेर तोड़कर चखने लगा।

उस झाड़ का मालिक गंगादास ही था। उसने सोमनाथ को बेर तोड़कर खाते देख डांटा—"अबे, तुम बड़े आराम से बेर तोड़कर खाते जा रहे हो? क्या इस पेड़ को तुमने अपने दादा का समझ रखा है?"

"बाबूजी, दो दिन से मैं भूखा हूँ। इसीलिए दो-चार फल तोड़ लिया।" सोमनाथ ने उत्तर दिया।

गंगादास सोमनाथ की बगल में जा बैठा और पूछा—"तुम कहाँ जाते हो?"

"मैं श्रीनिवासपुर के गंगादास के घर जा रहा हूँ। पिछली रात को जंगल में रंगनाथजी का देहांत हो गया है। उन्होंने मुझ से बताया था कि गंगादासजी उनके मित्र हैं और उनकी मदद से ये बैल और गाड़ी बेचकर उनका कर्मकांड करवा दूँ।" सोमनाथ ने जवाब दिया।

"ओह! बेचारे रंगनाथ मर गये? क्या तुम उनके बेटे हो? जानते हो बेटा, तुम्हारे वास्ते वे कैसे परेशान थे? तुम्हारी चिंता में ही उनकी तबीयत बिगड़ गयी थी।" यों कहते गंगादास ने आँसू पोंछ लिये।

सोमनाथ की आँखों में भी आँसू आ गये। इसके बाद गंगादास सोमनाथ को अपने घर ले गया, अपनी पत्नी को सोमनाथ का रंगनाथ के पुत्र के रूप में परिचय कराकर बोला—"सुनते हैं, बेचारे रंगनाथ जंगल में मर गये हैं। मेरी मदद से कर्मकाण्ड पूरा कराने को कह गये हैं।"

यह खबर सुनकर रंगनाथ की पत्नी भी दुख से भर उठी और उसने सोमनाथ की ओर वात्सल्य भरी दृष्टि से देखा।

कर्मकाण्ड समाप्त हो गया। गंगादास ने सोमनाथ की अच्छी देखभाल की। बचपन में शायद यह लड़का नटखट भले ही रहा

हो, अब तो वह एकदम सुधर गया है। वह दो दिन तक भूखा रहा और बेर तोड़ कर खाते देख उस पर गंगादास नाराज़ हो गया था। इसलिए गंगादास अपनी करनी पर पछताने लगा।

रंगनाथ के कर्मकाण्ड के समाप्त होते ही सोमनाथ ने गंगादास के घर से चले जाने की बात बताई। लेकिन गंगादास ने समझाया– "बेटा, तुम कहाँ जाओगे? तुम्हें तो कोई जमीन-जायदाद भी नहीं है। तुम्हारे पिता के लिए मुझसे बढ़कर कोई आत्मीय मित्र भी नहीं है। इसलिए इस दुनिया में तुम्हारे साथ सब से ज्यादा निकट संपर्क रखनेवाला परिवार हमारा ही है! हमारी कन्या के साथ तुम्हारी शादी करेंगे। तुम हमारे ही घर रह जाओ! तुम्हें देखने पर हमें ऐसा लगता है कि हम तुम्हारे पिता को ही देख रहे हैं।"

गंगादास की बात सोमनाथ ने भी मान ली। उसका दामाद बनकर आखिर सोमनाथ उसकी थोड़ी-बहुत संपत्ति का भी वारिस बना और आराम से अपने दिन काटने लगा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, सोमनाथ अपने पिता के लिए एकदम अयोग्य पुत्र बना रहा, ऐसी हालत में चन्द मिनटों में वह रंगनाथ के विश्वासपात्र पुत्र बना और एक पुत्र के

अपने पिता के प्रति सारे कर्तव्य निभाय; साथ ही गंगादास और रंगनाथ की मैत्री को भी कैसे सफल बना सके? सोमनाथ के अन्दर यह जो परिवर्तन हुआ था, वह क्या सच्चा परिवर्तन था? उसने गंगादास से कभी यह नहीं कहा कि वह रंगनाथ का पुत्र नहीं है! क्या यह उसकी दुर्बुद्धि नहीं है? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा!"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "पिता और पुत्र के बीच के संबंध अगर कई वर्षों के अंतराल में बिगड़ जाते हैं, तो इसके असंख्य कारण होते हैं! बहुत

समय पूर्व ही टूटे लोहे के दर्वाजों को कोई भी टंकण पूर्ण रूप से जोड़ नहीं सकता। अगर सोमनाथ और उसके पिता के बीच वैमनस्य बढ़ गया तो उसका सारा दोष हम सोमनाथ के मत्थे नहीं मढ़ सकते! उसने इसी विश्वास के साथ अपना घर छोड़ दिया कि उसका पिता उसके प्रति सही ढंग से व्यवहार नहीं करता, इससे स्पष्ट है कि उसने अपने भीतर कोई दोष नहीं माना। अगर सोमनाथ के साथ तुलना करने पर रंगनाथ का पुत्र भी घर से भाग गया था, पर वह अपने पिता पर नाराज़ होकर नहीं, बल्कि पुलिस के डर से भाग गया था, क्योंकि वह जानता था कि वह खुद एक अपराधी है! यदि किसी अपरिचित रंगनाथ के साथ सोमनाथ अच्छा संबंध जोड़ पाया तो यह बात स्पष्ट है कि उसके भीतर स्वभावतः कोई दुर्गुण नहीं हैं, यही नहीं, एक ओर भूख से परेशान होते हुए भी उसने मृत व्यक्ति को जो वचन दिया था, उसका पालन किया। अगर उसमें स्वभावतः दुर्गुण होते तो गंगादास ने उनका पता लगाया होता, आँख मूंदकर वह अपनी पुत्री का विवाह सोमनाथ के साथ न करता। यह सही है कि सोमनाथ ने गंगादास से यह बात नहीं कही कि वह रंगनाथ का पुत्र नहीं है, इसके पीछे भी उसका कोई दुरुद्देश नहीं है! कर्मकांड के समाप्त होने तक गंगादास सोमनाथ को रंगनाथ का पुत्र ही माने तो अनावश्यक प्रश्न उत्पन्न नहीं होते! इसके बाद सोमनाथ ने अपने रास्ते आप जाना चाहा, मगर गंगादास ने सोमनाथ के भीतर अपने मृत मित्र रंगनाथ को देखा। ऐसी हालत में गंगादास की भूल को प्रकट करके उसके आनंद को नष्ट करना सोमनाथ की दृष्टि में अमानवीयता थी! इसीलिए सोमनाथ ने सच्ची बात नहीं बताई।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

मेधावी मंत्री

राजा शूरसेन ने एक बार अपने पड़ोसी राज्य पर हमला करके उसे अपने राज्य में मिलाना चाहा और इस संबंध में अपने मंत्री की सलाह माँगी ।

मंत्री ने अपने विचार बताया—"महाराज, अगर पड़ोसी देश का मंत्री मेधावी हो तो उस देश पर हमारा आक्रमण न करना ही अच्छा है, मेधावी न हो तो हम जरूर युद्ध करेंगे ।" यों सलाह देकर मंत्री ने पड़ोसी राजा के पास एक दूत को भेजा ।

दूत ने पड़ोसी राजा के पास पहुँचकर विनयपूर्वक संदेश सुनाया—"महाराज ! हमारे राजा आप से यह चाहते हैं कि आप हमारे राजा के पास मरने पर जीनेवाले और जीने पर जीनेवाले व्यक्ति को भेज दें ।" राजा ने मंत्री की ओर देखा । मंत्री ने श्राद्ध कर्म करनेवाले एक ब्राह्मण तथा एक वैद्य को दूत के साथ भेजा ।

राजा शूरसेन के मंत्री ने उन दोनों का खूब सत्कार किया । उन्हें वापस भेजकर राजा से कहा—"महाराज, पड़ोसी देश पर हमला करना उचित नहीं है, क्योंकि उस देश का मंत्री महान मेधावी है ।" "सो कैसे ?" राजा ने पूछा ।

"मरने पर जीनेवाले को भेजने को बताया तो श्राद्ध कर्म करानेवाले ब्राह्मण को भेजा मैंने । किसी के मरने पर ही ब्राह्मण जी सकता है । इसी प्रकार जीने पर जीनेवाला आदमी वैद्य है । मरीजों को न जिला सकनेवाला वैद्य जी नहीं सकता ।" मंत्री ने कहा ।

उल्टी गंगा

सोनपूर का जमीन्दार अपने गाँव की भलाई के काम तभी करता था जब कि उसके द्वारा उसका नाम-यश फैल जाता हो। उस गाँव के अधिकारी होकर भी अपनी प्रजा की तक़लीफ़ों को दूर करने की कोशिश नहीं करता था। सोनपूर में बहुत समय से पीने के जल का कोई कुआँ न था। उस गाँववालों को बहुत दूर से पानी लाना पड़ता था। ऐसी हालत में एक वर्ष अकाल पड़ा और पानी की समस्या बड़ी भयंकर हो गई। जमीन्दार से लोगों ने कुआँ खुदवाने की प्रार्थना की, लेकिन उसने कोई ध्यान न दिया।

जमीन्दार के पुत्र ने गाँववालों के द्वारा चंदा वसूल कर बहुत बड़ा कुआँ खुदवाया। बड़ी गहराई तक खोदने पर भी पानी नहीं निकला, उल्टे चट्टानें निकल आईं। उन चट्टानों को तोड़कर पानी निकलवाने की ताक़त गाँववालों में न थी।

जमीन्दार के पुत्र ने एक दिन कुएँ में थोड़ा सा मिट्टी का तेल गिरवा दिया। जमीन्दार ने यह सोचकर कि उसके गाँव में मिट्टी का तेल निकलनेवाला है, इसका यश लूटने के ख़्याल से बहुत सारे रुपये ख़र्च कर चट्टानें तुड़वाईं और कुएँ में पानी निकल आया। इस प्रकार गाँववालों की पानी की समस्या हल हो गई।

मिठाई की पिशाचिनियाँ

जगन्नाथ की माँ ने रसोई बनाकर अपनी जीविका चलाते पितृहीन लड़के को पाल-पोसकर बड़ा किया। जगन्नाथ भी अपनी माँ की मदद करते हुए रसोई बनाने में बड़ा कुशल बना। अपनी माँ के मरने पर जगन्नाथ के पास जो कुछ पूँजी बची थी, लेकर दूसरे गाँव में चला गया और वहाँ पर मिठाई की दूकान खोल दी।

पहला दिन जगन्नाथ की मिठाई की अच्छी बिक्री हुई। मगर शाम के होते होते उसके पास एक दूसरी मिठाई की दूकानवाला अपनी दूकान बंद करके जगन्नाथ के पास आया और पूछा—"अजी, सुनो, तुमने अभी तक अपनी दूकान बंद क्यों नहीं की?"

"इतनी जल्दी क्यों बंद करूँ?" जगन्नाथ ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"हाँ, तुम तो नये दूकानदार हो न! हमारा अनुभव तुम्हें भी मिल जाय, इस ख्याल से मैंने तुम्हें समझाया।" यों बताकर वह दूकानदार चला गया।

जगन्नाथ की समझ में न आया कि आखिर बात क्या है। इतने में एक दूसरी मिठाई की दूकानवाला उधर से गुजरते हुए पूछ बैठा—"भाई साहब, तुमने अभी तक दूकान बंद क्यों नहीं की?"

"मैं तो नया आदमी हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि आप लोग यों घबराये हुए दूकान बंद करने की बात क्यों कहते हैं? मेहर्बानी करके असली बात बता दीजिए!" जगन्नाथ ने पूछा।

उस दूकानदार ने यों समझाया—"अंधेरे के फैलते ही इस गाँव में दो पिशाच आ धमकते हैं। वे चाहे किसी भी रूप में आ सकते हैं। उन्हें मिठाई से बड़ा प्रेम है।

दीनानाथ गुप्त

मिठाई को देखते ही थालियों के साथ उठा ले जाते हैं। मगर बंद दूकानों की कुछ हानि नहीं करते।"

इसके बाद वह जगन्नाथ को जल्द दूकान बंद करने की सलाह देकर चला गया।

वैसे जगन्नाथ भूत-प्रेत और पिशाचों से बिलकुल डरता न था। उसने अपने गाँव में चिराग भूतों को देख लिया था। वे कभी किसी को छेड़ते न थे। बल्कि मनुष्यों में ऐसे कई दुष्ट लोग हैं जो अपनी ही जाति के लोगों को सताते हैं। इसलिए जगन्नाथ अपनी दूकान बंद किये बिना हिम्मत के साथ बैठा ही रह गया। थोड़ी देर बाद दो औरतें ठाठ से दूकान के अंदर आ घुसीं। वे देखने में माँ-बेटी जैसी लगती थीं। माँ ने जगन्नाथ से पूछा–"कल रात को मेरी बेटी की शादी होनेवाली है। क्या तुम पंद्रह झाबों की मिठाई बना सकते हो?"

उस औरत की बातें जगन्नाथ को कुछ विचित्र-सी लगीं, उसने उन औरतों की ओर ध्यान से देखा। उनके पैर पीछे की ओर मुड़ हुए थे। उसे मालूम हुआ कि वे मिठाइयाँ खानेवाली पिशाचिनियाँ हैं।

जगन्नाथ मुस्कुरा कर बोला–"आप मिठाइयाँ चाहेंगी तो मैं मिनटों में बनाकर दे सकता हूँ। मगर यह बताइये कि आप किस तरह की मिठाइयाँ चाहते हैं?"

पिशाचिनियों ने सभी मिठाइयाँ चखकर देखा और कहा–"नारियल की मिठाई बड़ी अच्छी है। हमें पंद्रह झाबे भरकर मिठाइयाँ चाहिए। बढ़िया गुड़ और गरी से बनाओ।"

"अच्छी बात है, पहले आप थोड़े पैसे दे दीजिए, मैं गुड़ और गरी खरीद लूँगा।" जगन्नाथ ने पूछा।

बूढ़ी पिशाचिनी ने अपनी कमर से रुपयों की थैली निकाली, जगन्नाथ के हाथ रखते हुए बोली–"इसमें पाँच सौ रुपये हैं; बाकी रुपये कल मिठाई लेते वक़्त दे दूँगी।" यों कहकर वह चल पड़ी।

छोटी पिशाची ने अपनी माँ से कहा– "तुमने उसे रुपये क्यों दिये? पैसे देकर मिठाई खाने से मुझे कड़ुवी लगती है।"

इस पर माँ पिशाचिनी ठठाकर हँस पड़ी और बोली–"अरी पगली! यह नया दूकानदार है। इसके यहाँ से ज्यादा से ज्यादा मिठाइयाँ हड़पने के ख्याल से मैं यह चाल चली। हमने जो रुपये दिये, ये रुपये खर्च करके यह कल पंद्रह झाबे मिठाइयाँ बनायेगा। कल दूर से ही अपनी जीभें फैलाकर सारी मिठाइयाँ चाट जायेंगी। इसे देख वह डरकर भाग जाएगा। तब हम दूकान में रखी सारी मिठाइयाँ खा जायेंगी और गोलक में रखे सारे रुपये हड़प कर ले जायेंगी।"

ये बातें सुनने पर छोटी पिशाचिनी का चेहरा खिल उठा।

दूसरे दिन जगन्नाथ पंद्रह झाबे खरीद लाया। शाम के होते ही उसने चूल्हा जलाया और पिशाचिनियों का इंतज़ार करने लगा। अंधेरे के फैलते ही पिशाचिनियाँ आ पहुँचीं।

"आइये, पधारिये! वधू को मेरी शुभ कामनाएँ!" ये शब्द कहते जगन्नाथ ने उनका स्वागत किया।

"सुनो भाई, उधर बरात के लोग आ गये हैं। क्या मिठाई तैयार है?" पिशाचिनियों ने पूछा।

"आप लोग कृपया एक बार यहाँ आइये तो!" ये शब्द कहते जगन्नाथ उन्हें
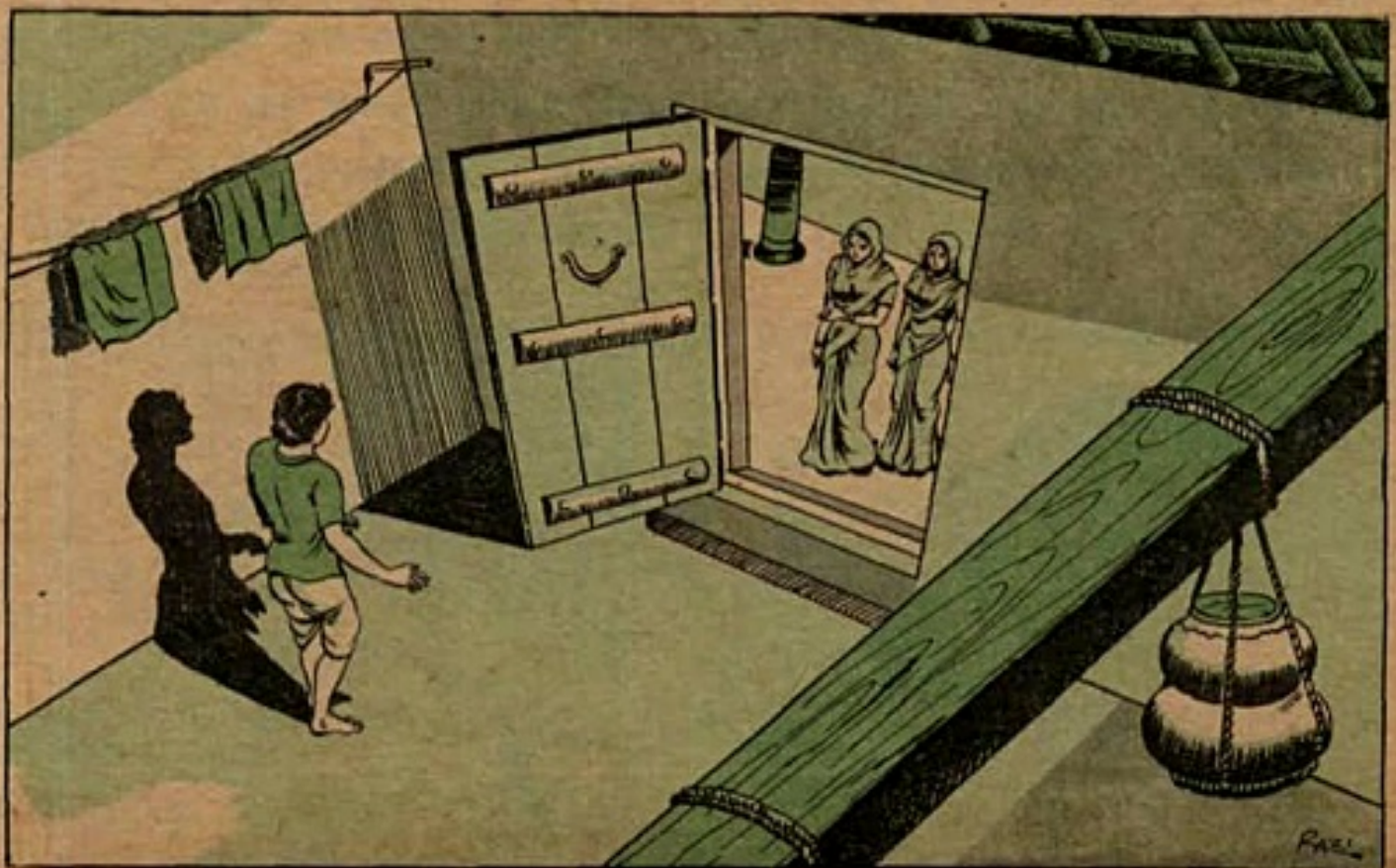
पिछवाड़े में ले गया। वहाँ पर पंद्रह झाबों को देख पिशाचिनियाँ खुशी के मारे नाच उठीं। मगर वहाँ पहुँच कर देखती क्या हैं, सारे झाबे खाली पड़े हैं।

"अरे, यह तो धोखा है, दगा है! झाबों में मिठाई कहाँ?" यों पूछते पिशाचिनियाँ क्रोध में आ गई और जगन्नाथ पर टूट पडीं।

"मेरी बातें सावधानी से सुनिये तो! सुनते हैं कि इस गाँव के मिठाई के दूकानदारों को दो पिशाच सता रहे हैं। यह भी सुना है कि वे दगा देकर झाबों की मिठाइयाँ हड़प रहे हैं। मेरे दोस्तों में एक ओझा साहब हैं। वह आज रात को पिशाचों का मारण होम करनेवाले हैं। मुझसे बताया कि मैं चूल्हा जलाकर तैयार रखूँ। मारण होम के लिए नीम के पेड़ की टहनियाँ चाहिए। वे टहनियाँ लाने चले गये हैं। वह ज्यों ही पिशाचों का मारण होम पूरा करेंगे, त्यों ही मैं मिनटों में आप के लिए मिठाई बनवा देता हूँ!" जगन्नाथ ने विश्वास करने लायक़ समझाया।

ओझा और मारण होम की बात सुनते ही पिशाचिनियाँ घबड़ा गयीं। इस बीच किसी ने दर्वाजा खटखटाकर पूछा– "जगन्नाथ! क्या तुमने सारी चीज़ों की तैयारी कर दी? पिशाचिनियों के घूमने का वक़्त हो गया है।" उस आदमी को ऐसा करने के लिए जगन्नाथ ने पहले ही तैयार कर रखा था।

"लीजिए! ओझा साहब आ गये हैं।" जगन्नाथ बोला। अब पिशाचिनियों से पल भर भी वहाँ पर रुकना मुमक़िन न हुआ। वे काली बिल्लियों के रूप में बदलकर वहाँ से भाग गईं।

इसके बाद पिशाचिनियाँ उस गाँव में फिर कभी दिखाई तक नहीं दीं।

"बेचारे! आप लोग पिशाचिनियों की वजह से काफी नुक़सान उठा चुके हैं।" इन शब्दों के साथ जगन्नाथ ने वे पाँच सौ रुपये उस गाँव के दूकानदारों में बराबर बाँट दिया।

याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य विश्वामित्र के वंशज थे। विश्वामित्र ने देवरात को पाल लिया था। देवरात ने पुत्र की कामना करके शिवजी के प्रति भयंकर तपस्या की। शिवजी ने प्रत्यक्ष होकर वर माँगने को कहा। इस पर देवरात ने निवेदन किया– "भगवान! मुझे आप जैसे एक पुत्र को प्रदान कीजिए।" शिवजी ने कहा–"मुझ जैसा व्यक्ति कोई दूसरा नहीं है। मैं ही तुम्हारे पुत्र के रूप में पैदा होकर पृथ्वी पर शुक्ल यजुर्वेद को फैलाऊँगा।"

देवरात ने घर लौटकर यज्ञ किया। यज्ञवेदी पर प्रकाश की किरणें फैलानेवाला बालक प्रत्यक्ष हुआ। देवरात ने उस बालक का नामकरण याज्ञवल्क्य किया।

याज्ञवल्क्य वैशम्पायन के शिष्य के रूप में विख्यात हुए। पर कहा जाता है कि उन्होंने ऋग्वेद, सामवेद और अथर्वण वेद का अन्य मुनियों के यहाँ अध्ययन किया है और वैशाम्पायन के यहाँ केवल यजुर्वेद का अध्ययन किया है। शुक्ल तथा कृष्ण यजुर्वेद की शाखाओं में शुक्ल यजुर्वेद का प्रचार करनेवाले याज्ञवल्क्य हैं।

वैशम्पायन महर्षि व्यास के शिष्यों में से एक हैं। एक बार वैशम्पायन ब्रह्महत्या के दोष का शिकार हुए। बताया जाता है: कुछ लोगों ने आपस में यह शर्त लगाई कि उन्हें सात दिनों के अंदर मेरु पर्वत तक जाकर वापस लौटना है, जो इस प्रकार न लौटेगा, वह ब्रह्महत्या के पाप का शिकार होगा। वैशम्पायन उस अवधि के अन्दर लौट न पाये, इस कारण वे ब्रह्महत्या के पाप के शिकार हो गये। मगर यह एक दंत कथा प्रतीत होती है। क्यों कि वैशम्पायन ने सचमुच ब्रह्महत्या की है। वे एक दिन अपने शिष्यों को

इंद्रवज्रस्तव नामक मंत्रोपदेश कर रहे थे, उस वक़्त एक ब्राह्मण बालक उनके बीच से पैदल चला आया। इस पर वैशम्पायन ने अपने हाथ के दाभों को उस बालक पर फेंक दिया, वे दाभ वज्रायुध बनकर उस बालक को मार बैठे। इस पर वैशम्पायन ने अपने शिष्यों से पूछा कि उसके ब्रह्महत्यावाले पाप को कौन स्वीकार करेगा? तब याज्ञवल्क्य ने कहा था–"इस पाप को मैं स्वीकार कर सकता हूँ। मैं इस पाप से बड़ी आसानी से मुक्त हो सकता हूँ।"

याज्ञवल्क्य की ये बातें सुन वैशम्पायन क्रोध में आये और बोले–"तुम्हारा यह अहंकार! तुम मेरी विद्या मुझे सौंपकर यहाँ से चले जाओ।"

वास्तव में याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु को यह बोध कराया था कि 'आप जो कार्य नहीं कर पायेंगे, उसे बड़ी आसानी से मैं कर सकता हूँ।' यों समझाकर अपने गुरु के क्रोध के पात्र बने याज्ञवल्क्य सचमुच गुरु से बढ़कर महान शिष्य हैं। उन्होंने महाराजा जनक के साथ तात्विक चर्चा करके उन्हें प्रसन्न किया और ब्राह्मणों के क्रोध का शिकार हुए।

इसके बाद याज्ञवल्क्य ने वैशम्पायन के यहाँ जो कुछ सीखा, उसे उन्हें लौटा दिया। तब सूर्य की आराधना करके उनसे यजुर्वेद सीखा। हो सकता है कि यह भी एक दंत कथा हो। क्यों कि वेदों के विभाजन के बाद व्यास महर्षि ने वैशम्पायन को ही यजुर्वेद सिखाया था। इसलिए वैशम्पायन तथा याज्ञवल्क्य के बीच किसी तीसरे व्यक्ति के लिए कोई स्थान नहीं है।

याज्ञवल्क्य के मैत्रेयी और कात्यायनी नामक दो पत्नियाँ थीं। उन्होंने घर त्यागकर तपस्या करने जाते वक़्त अपनी सारी संपत्ति दोनों पत्नियों के बीच बराबर बांटकर दे दी। पर मैत्रेयी ने कहा–"आप इस संपत्ति से भी एक महान वस्तु की खोज में जा रहे हैं। मुझे भी यह संपत्ति नहीं चाहिए।" यों कहकर मैत्रेयी ने अपने पति से तत्वोपदेश प्राप्त किया था।

इंद्रत्व को प्राप्त राजा

एक बार इंद्र ने विश्वरूप नामक व्यक्ति का संहार किया और उस पाप से भयभीत होकर वे भाग गये। आख़िर एक सरोवर के भीतर छिप गये। इस कारण इंद्र का पद खाली हो गया।

उस समय पृथ्वी पर नहुष नामक एक महान राजा शासन करते थे। उन्होंने असंख्य राक्षसों का वध किया, अनेक यज्ञ किये और इस प्रकार वे मानवों के भीतर सर्वोत्तम मानव कहलाये।

देवताओं ने सोचा कि इंद्र के पद का खाली रहना उचित नहीं है, इसलिए परस्पर मंत्रणा की और अंत में राजा नहुष को उस पद पर बिठाने का सब ने एक मत से निश्चय कर लिया।
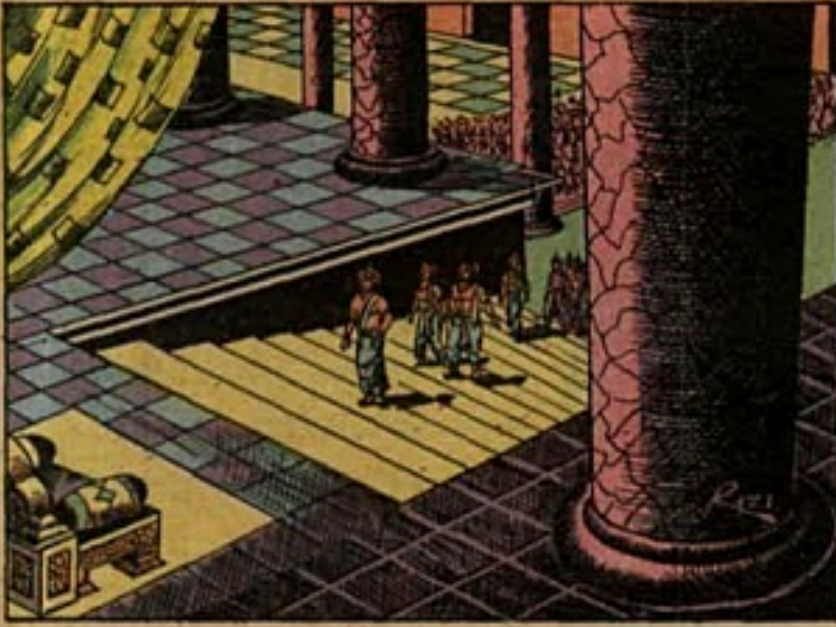
राजा नहुष ऋषियों तथा देवताओं के निर्णय का तिरस्कार न कर पाये, अतः स्वर्ग में जाकर इंद्र के सिंहासन पर बैठ गये । इस प्रकार एक मानव को इंद्रत्व प्राप्त हो गया ।

नहुष ने थोड़े समय तक नम्रता पूर्ण व्यवहार किया, पर धीरे धीरे उसके भीतर अहंकार बढ़ता गया । एक दिन उसने इंद्र की पत्नी शचीदेवी को देखा ।

नहुष शचीदेवी पर मोहित हो देव सभा में देवताओं से बोला–"मैं इस वक्त इंद्र हूँ । इस कारण शचीदेवी को मेरी पत्नी बननी चाहिए ।" ये बातें सुन देवता आश्चर्य में आ गये ।

एजेंट बन्धुओ,

अगले पन्ने में हमने पाठकों के नाम एक पत्र और साथ ही प्रश्नावली प्रेषित की है।

यह प्रश्नावली चन्दामामा के प्रति पाठकों की रुचि जानने के लिए प्रस्तुत की गई है। उनसे प्राप्त उत्तर चन्दामामा के लिए उपयोगी होंगे। हम समझते हैं कि यह कार्य आप के लिए भी रुचिकर होगा।

हमने पाठकों से निवेदन किया है कि वे अपने उत्तर आप के पास पहुँचा दें। आप से अनुरोध है कि आप उन सभी उत्तरों को इकट्ठा करके यथा शीघ्र हमारे पास पहुँचाने की कृपा करें। आशा है कि आपका पूरा सहयोग हमें प्राप्त होगा।

सधन्यवाद,

आपका
प्रकाशक

प्रिय पाठक,

आप सब को भली भांति विदित ही है कि चन्दामामा गत ३२ बरसों से आप सबके मनोरंजन और ज्ञानवर्धन के हेतु कथा-कहानियाँ, पुराण, इतिहास व धार्मिक कथायें आदि प्रस्तुत करता आ रहा है। आप सब ने इन रचनाओं को बड़े ही चाव से पढ़ा, सराहा और हमारा उत्साह बढ़ाया। समय समय पर आपने हमें उचित और उपयोगी सुझाव भी दिये; जिसके लिए हम आप के प्रति अत्यंत आभारी हैं।

हम आपकी इस प्यारी पत्रिका को और भी अधिक सुंदर और सुरुचिपूर्ण बनाना चाहते हैं। इस उपयोगी कार्य में आपका विचार जानने के लिए हम यहाँ पर एक प्रश्नावली प्रस्तुत कर रहे हैं। कृपया आप इसमें दिलचस्पी लेकर अगले पन्नों में दिये गये प्रश्नों के उत्तर देने का कष्ट करें। आपके उत्तर चन्दामामा को अधिक लोकप्रिय बनाने में सहायक होंगे।

बस, आपको केवल यही करना होगा कि प्रश्नों के सामने दिये गये खानों में यदि आप का उत्तर 'हाँ' है तो ✓ लगाइये। अगर 'नहीं' तो × लगाना न भूलें।

इन खानों की पूर्ति करके उस पन्ने को फाड़कर अपने समीप के हमारे एजेंट बन्धु के हाथ सौंप दीजिए। अगर समीप में हमारे एजेंट नहीं हो, तो डाक द्वारा भेजने की कृपा करें।

<u>आप लोगों से प्राप्त सभी उत्तरों में से लॉटरी द्वारा पचास उत्तर निकालकर उन्हें उचित पुरस्कार दिये जायेंगे।</u>

आपके सहयोग की प्रतीक्षा में,

आपका
प्रकाशक

इस प्रश्नावली को भरकर हमें पहुँचाना न भूलें । -

1. आपका नाम : —
2. आपकी आयु : 8–15 वर्ष ☐ 16–20 वर्ष ☐ 20 से अधिक ☐
3. शिक्षा का विवरण : मेट्रिक ☐ इन्टर/पी.यू.सी ☐ उपाधि ☐
4. क्या आप चन्दामामा हमसे डाक द्वारा मंगाते हैं या एजेंट से ख़रीदते हैं? : डाक से ☐ एजेंट से ☐
5. आप कितने बरस से चन्दामामा पढ़ रहे हैं? : 1–3 ☐ 4–10 ☐ 11–15 ☐ 15 से अधिक ☐
6. आपके घर में कुल कितने लोग चन्दामामा पढ़ रहे हैं? : 3 ☐ 4 ☐ 5 ☐ 6 ☐
7. क्या आपसे आपके मित्र या पड़ोसी चन्दामामा लेकर पढ़ते हैं, तो कितने? : 1 ☐ 2 ☐ 3 ☐ 4 ☐ 5 ☐
8. चन्दामामा में प्रकाशित इन कहानियों या धारावाहियों में किस ढ़ंग की रचनाओं को आप बहुत पसंद करते हैं ? : चिरंजीवी की कथायें ☐ २५ वर्ष पहले की चन्दामामा की कहानी ☐ बेताल कथायें ☐ धारावाहिक पुराण कथायें ☐ भल्लूक मांत्रिक जैसी धारावाहियां ☐ पंचतंत्र की कथायें ☐

लोभ का फल (नववंर 1978) ☐ धोखे की सचाई (नवंबर 1978) ☐ मूर्ख मंत्री (दिसंबर 1978) ☐ माता का हृदय (दिसंबर 1978) ☐ विश्वास की दवा (जनवरी 1979) ☐ रंग बदलनेवाला मुर्गा (जनवरी 1979) ☐ जादू के नींबू (फ़रवरी

1979) ☐ असभ्य कौन है (फ़रवरी 1979) ☐ झूटी उदारता (मार्च 1979) ☐ स्वर्ग का रास्ता (मार्च 1979) ☐ दरबारी शिल्पी (अप्रैल 1979) ☐ सास और बहू (अप्रैल 1979) ☐ भूतों की कोठी (मई 1979) ☐ सम्मान (मई 1979) ☐ ईमानदार नौकर (जून 1979) ☐ सच्चा खजाना (जून 1979) ☐ रोग निदान (जुलाई 1979) ☐ अधिकारी की पत्नी (जुलाई 1979) ☐

9. चन्दामामा की भाषा आपको सरल लगती है या कठिन? : सरल ☐ कठिन ☐

10. चन्दामामा के मुख पृष्ठ आपको पसन्द हैं या नहीं? : पसन्द ☐ नापसन्द ☐

11. कहानियों के चित्र पसन्द हैं या नहीं? : पसन्द ☐ नहीं ☐

12. हिन्दी चन्दामामा के अलावा क्या आप अन्य भाषाओं के चन्दामामा भी पढ़ते हैं? तो उनके नाम लिखें : ....

13. चन्दामामा के अलावा आप किन किन हिन्दी बाल पत्रिकाओं को पढ़ते हैं? तो उनके नाम लिखें : ....

14. चन्दामामा पढ़ने के बाद आप उन्हें संग्रह करके रखते हैं या नहीं? : हाँ ☐ नहीं ☐

पता : ....

....

तारीख़ : ....

शचीदेवी को जब यह बात मालूम हो गई, तब वह अत्यंत व्याकुल हो उठी। उसने देवगुरु बृहस्पति को बुलवा भेजा और इस संबंध में उनकी सलाह माँगी।

बृहस्पति ने अपनी राय शचीदेवी को बताई। इस पर शचीदेवी ने नहुष के पास ख़बर भेजी कि अगर नहुष उसके पास सप्तर्षियों के द्वारा ढोनेवाली पालकी में आये तो वह उसे स्वीकार करेगी।

सप्तर्षियों में सब से नाटा व्यक्ति अगस्त्य थे और वह तेजी से चलने की शक्ति नहीं रखते थे। नहुष शीघ्र. शचीदेवी के पास पहुँचने को कातर था। उसने अगस्त्य को अपने पैर से टोका।

इस पर अगस्त्य क्रोध में आ गये। उन्होंने नहुष को शाप दिया कि वह बिना पैरवाला साँप बन जाय! तब नहुष सर्प बनकर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

मगर अगस्त्य को नहुष की हालत पर दया आ गई। उन्होंने एक महान व्यक्ति के द्वारा नहुष के शाप-मुक्त होने का अनुग्रह किया। एक दिन उस सर्प ने भीम को पकड़ लिया।

युधिष्ठिर ने आकर अपने भाई को मुक्त करने की सर्प से प्रार्थना की। सर्प के प्रश्नों का युधिष्ठर ने सही उत्तर देकर न केवल भीम को मुक्त कराया, बल्कि नहुष को भी शाप से विमुक्त बनाया।

वैश्य पुत्र जो राजा बना

धृष्ट नामक राजा का पुत्र नाभाग था। नाभाग ने सुप्रभा नामक एक वैश्य कन्या पर मुग्ध हो उसके साथ अपना विवाह करने की इच्छा सुप्रभा के पिता के सामने प्रकट की। सुप्रभा के पिता ने समझाया कि एक क्षत्रिय युवक का वैश्य कन्या के साथ विवाह करना उचित नहीं है। फिर भी नाभाग ने उस कन्या के साथ विवाह करने का हठ किया। इस पर सुप्रभा के पिता नें समझाया—"तुम्हारे और मेरे राजा तुम्हारे पिता हैं। हम उनकी सेवा में पहुँचकर उनका निर्णय जान लेंगे।"

तब वे दोनों राजा धृष्ट के पास पहुँचे और अपने अपने विचार उनके सामने रखे। राजा ने उस विवाह के प्रति अपनी आपत्ति बताई। अपने पिता के निर्णय की भी परवाह किये बिना नाभाग राक्षस विधि से सुप्रभा को उठा लाया और उसके साथ विवाह किया। इस पर सुप्रभा के पिता ने राजा धृष्ट के पास जाकर शिकायत की। धृष्ट अपने पुत्र के साथ युद्ध के लिए तैयार हो गये। उन दोनों के बीच जब युद्ध हो रहा था, तब एक परिव्राजक उधर आ निकला। उसने युद्ध का कारण जानकर समझाया—"राजन, नाभाग एक वैश्य युवती के साथ विवाह करके वैश्य बन गया है। इसलिए एक क्षत्रिय को वैश्य के साथ युद्ध नहीं करना चाहिए।"

इस पर पिता-पुत्र के बीच युद्ध रुक गया। धृष्ट ने नाभाग को वैश्यवृत्ति का अवलंबन करने का आदेश दिया। नाभाग राजा का आदेश मानकर वैश्यवृत्ति करने लगा। कालांतर में नाभाग को सुप्रभा के द्वारा भनंद नामक एक पुत्र पैदा हुआ। भनंद जब किशोरावस्था में पहुँचा, तब

उसने अपनी माता से पूछा–"माँ, मैं किस वृत्ति का अवलंबन करूँ?"

"तुम गाय चराओ, बेटा!" सुप्रभा ने सुझाया। भनंद ने सोचा कि 'गोरूपिणी पृथ्वी पर शत्रु राजा शासन करता है, ऐसी हालत में मैं उसका कैसे पालन करूँ?' यों विचार कर भनंद ने उस भूमि का संपादन करने का निश्चय किया। इस विचार को लेकर भनंद हिमालयों में गया। वहाँ पर नीप नामक एक राजर्षि के दर्शन करके उनके सामने अपनी समस्या रखी।

नीप अस्त्र-शस्त्र की सारी विद्याओं का अच्छे जानकार थे। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता के साथ वे सारी विद्याएँ भनंद को सिखाईं।

अस्त्र विद्याओं में पारंगत हो भनंद लौट आया। तब तक राजा धृष्ट का देहांत हो चुका था और नाभाग के छोटे भाई का पुत्र वसुरात शासन करता था। भनंद ने वसुरात से पूछा कि उसके पिता का हिस्सा आधा राज्य उसे सौंप दे।

पर वसुरात ने भनंद की इच्छा की अवहेलना करके कहा–"तुम्हारे पिता ने वैश्य नारी के साथ विवाह किया, वैश्य बनकर राजा बनने की योग्यता से वंचित हो गया है। ऐसी हालत में जब उन्हें जो योग्यता नहीं है, वह तुम्हें कैसे प्राप्त होगी? इस कारण मैं तुम्हें राज्य नहीं दे सकता।" ये बातें सुन भनंद क्रोध में आया। वसुरात के साथ युद्ध करके उसे मार डाला और संपूर्ण राज्य पर अधिकार कर लिया। पर उसने स्वयं उस राज्य पर शासन नहीं किया, बल्कि अपने पिता नाभाग से शासन करने की प्रार्थना की।

लेकिन नाभाग ने अपने को राज्य शासन करने योग्य न बताकर समझाया– "बेटा, यह राज्य तुमने जीत लिया, इसलिए इस पर तुम्हीं शासन करो।"

इस प्रकार वैश्य-पुत्र के रूप में पैदा हुआ भनंद फिर से राजा बना।

साधू का ज्योतिष्य

एक बार माणिक्यपुर नामक गाँव में एक साधू अपने दो शिष्यों के साथ आ पहुँचा। गाँव के बाहर एक कुटी में रहते हुए गाँववालों को उनका भूत-भविष्य बताकर धन वसूलने लगा। उसका दैनिक कार्यक्रम था–रोज सुबह जब गाँववाले अपना भविष्य जानने के लिए आते, तब साधू उनका भूतकालीन जीवन हूबहू बता देता, तब उनका भविष्य बताता। वैसे साधू उस गाँव के लिए नया था, फिर भी गाँव का कोई भी व्यक्ति पहुँचकर अपना भविष्य जानने की इच्छा प्रकट करता तो साधू उस व्यक्ति का नाम एक काग़ज़ पर लिख लेता, भीतरी कमरे में चला जाता, थोड़ी देर रहकर काग़ज़ पर उनके भूत कालीन जीवन की बातें लिख लाता, तब पढ़कर सुना देता। इसके बाद ही साधू उनके भविष्य की बातें सुना देता।

गाँव के किसी भी व्यक्ति का नाम ले, साधू उनके भूतकालीन जीवन की सच्ची बातें सुना देता, जिससे गाँववालों के मन में उस साधू के प्रति अपार विश्वास जम गया। फिर क्या था, लोग अपनी जन्मकुंडली जानने के ख्याल से टूट पड़ने लगे।

पर उसी गाँव में विनोद नामक एक युवक था, उसके मन में यह शंका हुई कि साधू की चाल में कोई धोखा है। साधू तो जन्मकुंडली जानने के लिए आये हुए व्यक्तियों के नाम लिखकर अन्दर चला जाता है, बाहर आने पर वह मौखिक रूप से सारी बातें नहीं सुनाता, बल्कि काग़ज़ पर लिखकर लाता है और तब सुनाता है। साधू जब अन्दर चला जाता तब उसके साथ उसका एक शिष्य भी चला जाता है।

विनोद ने साधू महाराज के दूसरे शिष्य से पूछा–"सुनो भाई, साधू महाराज अंदर

सरोजा भार्गव

चले जाते हैं तो जल्दी बाहर नहीं आते, अन्दर क्या किया करते हैं?"

शिष्य ने बताया–"वे तो समाधि में जाकर उस व्यक्ति के भूत और भविष्य की बातें जान लेते हैं।" यह उत्तर पाकर विनोद संतुष्ट नहीं हुआ। उसके मन में यह शंका पैदा हुई कि सन्यास लेनेवाला व्यक्ति लोगों की जन्मकुंडलियाँ बताकर धन क्यों वसूलता है?

इससे भी खास बात यह थी कि साधू तो भविष्य बताते हैं, मगर उसकी सचाई की किसी ने जाँच नहीं की। इसलिए विनोद ने अपने मन में सोचा–"मैं इस साधू की जन्मकुंडली का पता लगा लेता हूँ।"

जब सारा गाँव सो गया, तब विनोद साधू की कुटी के समीप में जाकर छिपकर बैठ गया। आधी रात के क़रीब साधू अपने शिष्यों से कह रहा था–"इस गाँव के लगभग सभी लोगों की हमने जन्मकुंडली बताई। इसलिए तुम लोग फ़ुरसत के वक़्त पड़ोसी गाँव में भीख माँगने जाओ और वहाँ के लोगों के विवरण लिख लाओ। तुम लोग अपना वेष बदलना न भूलो; क्योंकि जब हम उस गाँव में जायेंगे तब तुम्हें कोई न पहचान ले।"

साधू के रहस्य का पता विनोद को बड़ी आसानी से लग गया। साधू जिस गाँव में जाना चाहता था, उस गाँव में उसके शिष्य पहले ही पहुँच जाते, उस गाँव के लोगों के विवरण लिखकर ला देते। जो व्यक्ति अपना भविष्य जानना चाहता, उस व्यक्ति का नाम लिखकर साधू एक शिष्य को साथ लेकर अन्दर चला जाता, उसकी मदद से उसके सारे विवरण उस पुस्तक में से एक काग़ज़ पर लिखकर बाहर चला आता, उसे पढ़कर सुना देता, इस प्रकार उस व्यक्ति के मन में साधू अपने प्रति पूरा विश्वास पैदा करवा लेता था। तब उसके भविष्य के बारे में जो भी मन में आया, कह देता था। उसके गलत साबित होने के पहले ही साधू उस गाँव को छोड़कर

चल देता था। इस बीच अगर साधू के द्वारा बताया गया भविष्य झूठा भी साबित होता तो वह व्यक्ति साधू के विरुद्ध दुष्प्रचार करके लोगों के बीच अपमानित होने की हिम्मत न करता था; अगर वह साधू की बातों को गलत बतला भी देता तो वे बातें लोग जल्द भूल भी जाते थे।

विनोद तब तक कुटी के बाहर इंतज़ार करता रहा, जब तक कुटी के भीतर के सारे लोग सो नहीं गये। फिर कुटी में घुसकर विनोद ने सारी कुटी छान डाली। उसे माणिक्यपुर के लोगों की विवरण पुस्तिका हाथ लगी। साथ ही एक थैली में नकली दाढ़ियाँ और मूंछें बरामद हुईं। विनोद उन्हें लेकर चुपचाप कुटी से बाहर निकला और अपने घर लौट आया।

दूसरे दिन विनोद अपने गाँव के अन्य लोगों के साथ साधू की कुटी पर पहुँचा, अपना भविष्य बताने का निवेदन किया। उसके साथ तीन और लोग भी थे, सब के नाम लिखकर साधू महाराज कुटी के भीतर चले गये। उनके साथ साधू का एक शिष्य भी अन्दर चला गया। वह थोड़ी देर में बाहर लौट आया और बोला–"आज साधू महाराज की तबीयत कुछ ठीक नहीं है। इस कारण वे आप लोगों का भविष्य कल बतायेंगे।

"ओह! बेचारे साधू महाराज तो अभी अभी बिलकुल चंगे थे, इस बीच में उन्हें

क्या हो गया है? चलो भाई, देख तो लें!" यों कहते विनोद कुटी में घुस पड़ा।

एक साथ कई लोगों को कुटी में घुसते देख साधू महाराज घबरा गये। वे बोले– "घबराने की बात नहीं है। आज मेरी तबीयत थोड़ी बिगड़ गई है। कल मैं आप का भविष्य बता दूंगा।"

"यह सब नहीं चलने का! आप को अभी बताना होगा।" विनोद ने हठ किया। बाक़ी लोग यह सोचकर डर के मारे चुप रह गये कि कहीं साधू महाराज उन पर नाराज़ हो जाये। मगर साधू ऐसे दिखाई दिये कि वे उसका कुछ जवाब देने की स्थिति में नहीं हैं।

"साधू महाराज! आप मेरे भविष्य की बात छोड़ दीजिए! पर बाक़ी तीनों का भविष्य मैं बता सकता हूँ।" यों कहते विनोद ने अपने अंगोछे से एक विवरण पुस्तिका निकाली।

फिर क्या था, साधू महाराज और उनके शिष्यों के दिल धड़क उठे।

विनोद एक एक का नाम लेकर उनकी जन्मकुंडली पढ़ने लगा। सब लोग अचरज में आ गये। उन्हें उस विवरण पुस्तिका का रहस्य मालूम न था। पर कुछ लोगों ने अपने बारे में उस पुस्तिका में लिखी गई बातों को खुद पढ़कर उसकी सच्चाई जान ली। इसके बाद विनोद ने थैली में से नकली दाढ़ियाँ और मूँछें निकालकर साधू महाराज के शिष्यों के चेहरे पर लगा दीं।

दूसरे ही क्षण लोगों ने उन्हें पहचानकर कहा–"हाँ, हाँ, ये ही लोग थोड़े दिन पहले हमारे गाँव में आये थे। आज इन्हें दाढ़ियाँ और मूँछें न थीं, इसलिए हम इनको पहचान न पाये।"

इसके बाद लोगों ने सब को बुरी तरह से पीटा। तब जाकर साधू और उनके शिष्यों ने सच्ची बात बताई। तब गाँववालों ने उन्हें अपने गाँव से भगा दिया और समझ लिया कि ज्योतिषी के प्रति उनके अंध विश्वास ने उन्हें सचमुच पागल बना दिया है।

कुरूपिनी

एक व्यापारी के एक कुरूपिनी कन्या थी। जब वह शादी के योग्य हो गई, तब व्यापारी ने उसके कई रिश्ते देखे। मगर उसके साथ शादी करने को कोई तैयार नहीं हुआ। व्यापारी ने धन, मकान आदि दहेज में देने का लोभ दिखाया, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। आख़िर व्यापारी ने अपने रिश्तेदारों में से एक अंधे युवक के साथ अपनी बेटी की शादी कर दी। थोड़े समय बाद उस गाँव में आँख का एक विशेषज्ञ वैद्य आया। वह कई लोगों की शस्त्र चिकित्सा करके फिर से दृष्टि ला चुका था।

व्यापारी के रिश्तेदारों ने उसे समझाया—"महाशय, आप भी अपने दामाद का इलाज कराकर उसे दृष्टि दिलवा दीजिए।" पर व्यापारी ने अस्वीकार सूचक सर हिलाकर कहा—"अब तो मेरी बेटी की गृहस्थी बड़े ही आराम के साथ चलती है। मैं जान-बूझकर अपने हाथों से उसे बिगाड़ना नहीं चाहता। फिर से दृष्टि पाने पर मेरा दामाद मेरी बेटी को वही आदर न देगा; इसलिए कुरूपिनी पत्नी की जोड़ी अंधा पति ही ठीक है।"
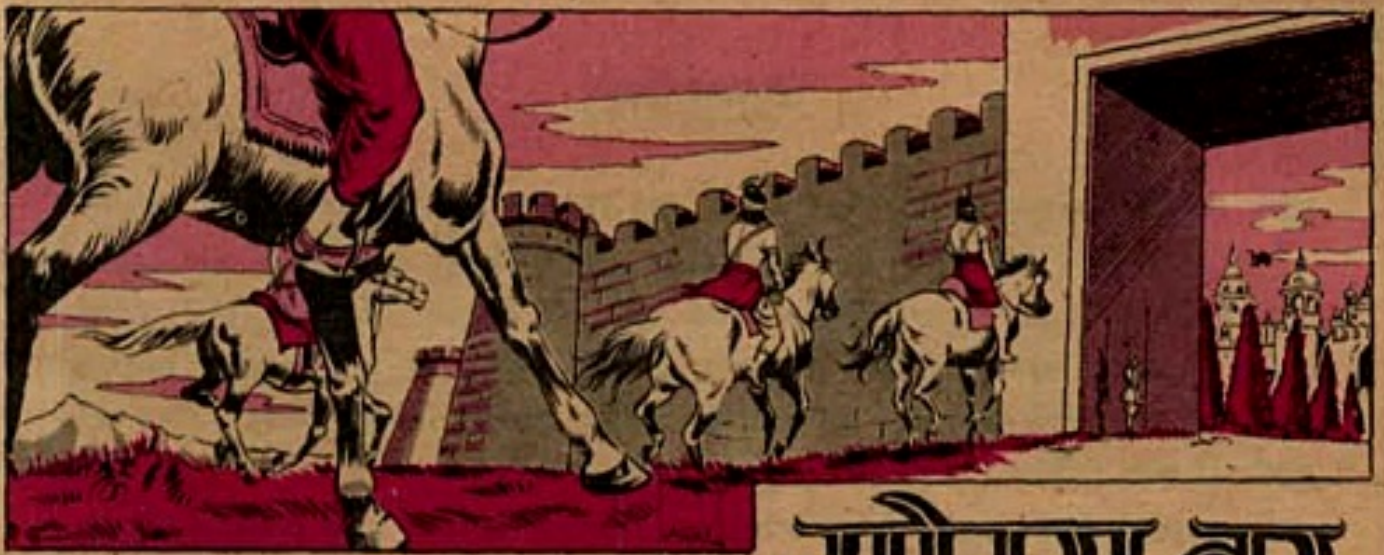
योग्य वर

वैशाली नगर के राजा प्रतापरुद्र की एक मात्र संतान थी सूर्यकुमारी। इसलिए राजा ने उसी को अपना पुत्र मानकर उसे शिक्षा के साथ सारी युद्ध-विद्याएँ भी सिखलाई। उसने सभी युद्ध विद्याओं में असाधारण प्रतिभा प्राप्त की।

सूर्यकुमारी युक्त वयस्या हो गई थी। अब राजा प्रतापरुद्र के सामने यह समस्या पैदा हो गई कि अपने अनंतर राज्य शासन करनेवाली राजकुमारी के वास्ते कैसे पति का चुनाव करें? यदि उसके साथ विवाह करनेवाला राजकुमार युद्ध-विद्याओं में राजकुमारी से अधिक प्रवीण निकले तो अड़ोस-पड़ोस के राजाओं के मन में यह हल्की भावना न रहेगी कि वैशाली नगर पर एक औरत शासन करती है। यही विचार करके राजा प्रतापरुद्र ने सभी देशों में यह संदेशा भेजा कि युद्ध-विद्याओं में राजकुमारी को हरानेवाले के साथ ही उसका विवाह किया जाएगा। स्वयंवर के दिन कई राजकुमार वैशाली नगर में पहुँचे। स्वयंवर में आये हुए लोगों में दो जंगली जाति के युवकों को देख राजा प्रतापरुद्र आश्चर्य में आ गये। वैसे उन्होंने यह नियम नहीं रखा था कि राजकुमारी के साथ राजवंश के लोगों को ही स्पर्धा करनी है, फिर भी राजा ने यह निश्चय किया कि जंगली युवकों को राजकुमारी के साथ स्पर्धा करने का मौक़ा नहीं देना चाहिए।

मगर यह निर्णय बेकार साबित हो गया, क्योंकि स्वयंवर में आये हुए राजा, राजकुमार सूर्यकुमारी के साथ सभी विद्याओं में स्पर्धा करके हार गये। इस कारण राजकुमारी के साथ वीरमल्ल तथा नागमल्ल नामक जंगली युवकों को स्पर्धा करना ज़रूरी हो गया। राजा ने गुप्त रूप से अपनी पुत्री को चेतावनी दी–" बेटी, इन युवकों को तुम

रामप्रताप श्रीवास्तव

बड़ी लगन के साथ हरा दो।" पर यह चेतावनी भी बेकार साबित हो गई।

वीरमल्ल ने सभी युद्ध-विद्याओं में सूर्यकुमारी को पराजित किया!

राजा प्रतापरुद्र एक ओर यह सोचकर चिंतित थे कि अपनी पुत्री का विवाह इस जंगली युवक के साथ करने से बचने का उपाय क्या है, तभी वीरमल्ल यह जल्दबाजी करने लगा कि सूर्यकुमारी के साथ उसके विवाह की घोषणा की जाय!

इस बीच नागमल्ल ने आपत्ति उठाते हुए कहा—"महाराज! स्पर्धा करनेवालों में मैं अभी बचा हुआ हूँ। मुझे मौक़ा दिये बिना राजकुमारी का विवाह आप वीरमल्ल के साथ कैसे कर सकते हैं?"

"हाँ, यह बात सही है, तब तुम्हारे और वीरमल्ल के बीच स्पर्धा होगी। देखेंगे, तुम दोनों में किस की जीत होती है?" राजा प्रतापरुद्र ने कहा। राजा ने सोचा कि दोनों युवकों की स्पर्धा में अगर नागमल्ल विजयी होगा तो वीरमल्ल का पिंड छुड़ाया जा सकता है। इसके बाद नागमल्ल का पिंड छुड़ाने के लिए कोई दूसरा उपाय सोचा जा सकता है। तब यह कहा जा सकता है—"नागमल्ल, तुमने राजकुमारी को नहीं हराया, इसलिए तुम्हारे साथ राजकुमारी की शादी नहीं हो सकती।"
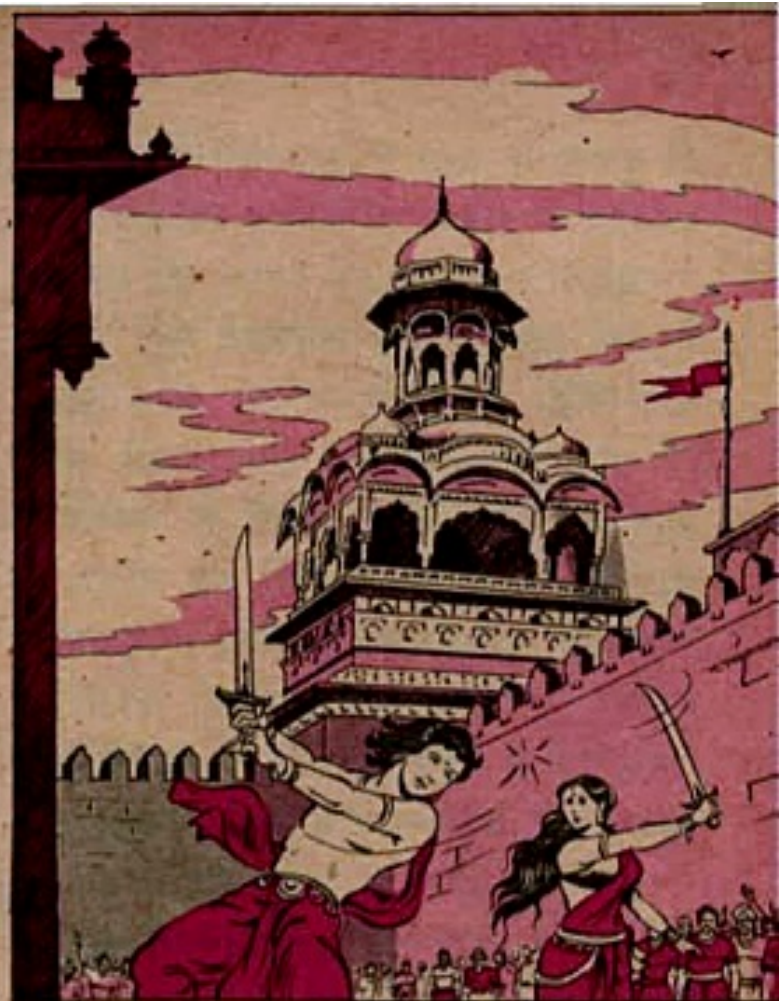
मगर वीरमल्ल ने नागमल्ल के साथ स्पर्धा करने से साफ़ इनकार किया और कहा—"महाराज, मैं राजकुमारी के साथ स्पर्धा करके उसके साथ विवाह करने आया हूँ, मगर प्रतियोगिता में भाग लेने आये हुए लोगों के साथ स्पर्धा करके दुश्मनी मोलने के लिए नहीं।"

वीरमल्ल के इस तर्क को सब ने स्वीकार किया। इस पर राजा ने अपनी पुत्री के साथ नागमल्ल को भी स्पर्धा करने का मौक़ा दिया। उस स्पर्धा में सूर्यकुमारी नागमल्ल के हाथों में भी हार गई।

अब राजा प्रतापरुद्र का मन शांत हो गया। उन्होंने कहा—"चूंकि राजकुमारी

दो युवकों के साथ विवाह नहीं कर सकती, इसलिए मैं इस स्पर्धा को रद्द कर देता हूँ।"

लेकिन राजा के इस निर्णय को स्वयंवर में आये हुए लोगों ने स्वीकार नहीं किया, उन लोगों ने बताया-"हम लोग संभव हो तो राजकुमारी के साथ शादी करने आये हैं, वरना शादी देखने के ख्याल से आये हैं, यूँ ही अपने देशों को लौटने के लिए नहीं, राजकुमारी को जिन दो युवकों ने हराया, उनमें से किसी एक को वरण कर उनके गले में वरमाला डाल दे। उनके साथ विवाह करें, यही न्याय संगत हो सकता है।"

इस पर राजा ने कहा-"राजकुमारी का निर्णय दूसरे दिन दरबार में घोषित किया जाएगा। इसलिए सभी लोग कृपया कल दरबार में हाजिर हो जाये।"

उस दिन रात को वीरमल्ल ने गुप्त रूप से राजा से मिलकर सूर्यकुमारी के सुनते कहा-"महाराज! मैं कुंतल देश के राजा केतुवर्मा का पुत्र हूँ। मेरा नाम जयसिंह है। मैंने सुना था कि आप की पुत्री सूर्यकुमारी मंत्र शक्तियाँ रखती हैं और साधारण युद्ध विद्याओं में उन्हें पराजित नहीं कर सकते, इसलिए मैंने सोचा कि एक राजकुमार के रूप में उनके हाथों में हार जाऊँ तो मेरे पिता तथा मेरे देश के लिए अपमान की बात होगी। इसलिए मैं एक जंगली युवक के रूप में चला आया, पर नागमल्ल सच्चा जंगली युवक है। उसका पिता जंगली जाति का सरदार है। इसलिए कल राजकुमारी भरे दरबार में मेरे कंठ में वरमाला डाल दे तो आप के वंश तथा आप का भी अपयश न होगा। मैं यही सूचना देने आया हूँ।" यों समझाकर वीरमल्ल चला गया। पर राजकुमारी अपने साथ स्पर्धा करके हारने से लज्जित होकर अपने वंश को गुप्त रखनेवाले युवक के कंठ में देखते-देखते वर माला डाल न पाई। इसलिए दूसरे दिन भरी सभा में राजकुमारी ने नागमल्ल के कंठ में वरमाला डालकर उसके साथ विवाह किया।

प्रमाण-पत्र

किसी देश का राजा अपने देश के गाँवों में उन वैद्य विद्यार्थियों को मासिक वेतन पर नियुक्त करता था जो अपने अपने गुरु के यहाँ से योग्यता के प्रमाण-पत्र लाते थे ।

यह बात मालूम होने पर उद्रेक नामक एक युवक एक वैद्य के यहाँ पहुँचा और उसने प्रमाण-पत्र की माँग की । वैद्य ने साफ़ कह दिया कि वह सिवाय अपने शिष्यों के दूसरों को प्रमाण-पत्र न देगा । उद्रेक ने छुरी दिखाकर वैद्य को मारने की धमकी दी ।

वैद्य ने लाचार होकर यों प्रमाण-पत्र लिखकर दिया–"उद्रेक नामक युवक ने कई वर्षों तक मेरे शिष्य बनकर वैद्य विद्या सीख ली है ।"

उस प्रमाण-पत्र को देख राजा ने कहा–"तुम तो मंद बुद्धिवाले मालूम होते हो ! सभी विद्यार्थी दो-तीन सालों में वैद्य विद्या में सफल होते हैं । तुम्हें इतने वर्षों तक क्यों सीखना पड़ा ? तुम्हें मैं नौकरी नहीं दूंगा ।"
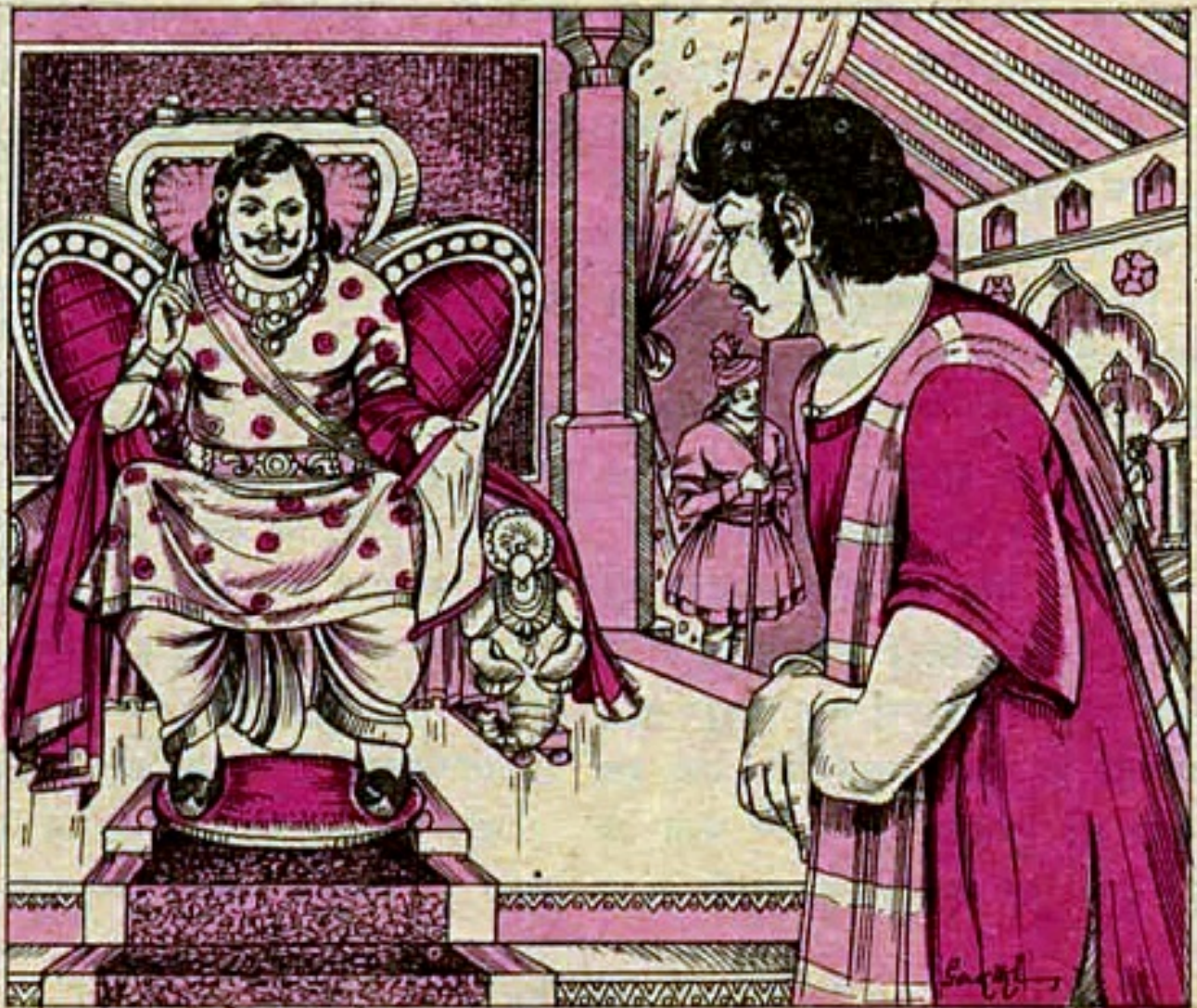
अफ़वाह

गणपतसिंह की यह आदत थी कि कोई खास बात हो तो सब से पहले वह उसका पता लगा ले और सब को सूचना दे! इस जल्दबाजी में वह कई बार ऐसी गलत सलत खबरों का प्रचार कर बैठता था, जिस वजह से कोई भी उसकी बातों पर यक़ीन नहीं करता था। अपनी बातों पर किसी का विश्वास न करते देख गणपत बड़ी पीड़ा का अनुभव करता था। मगर उसके प्रति लोगों का जो विचार था, उसे बदलने के लिए गणपत ने अनेक प्रयत्न किये, पर वह सफल न हुआ।

एक दिन गाँव में कोई गड़बड़ी हो गई। ऐसी गड़बड़ियों को सुलझाने में पड़ोसी गाँव का पटवारी बड़ा मशहूर था। गाँववालों ने जब पटवारी के पास इस समस्या को सुलझाने की खबर भेजी तो उसने दूसरे दिन आने की सूचना दी।

जिन दो पक्षों के बीच झगड़ा हुआ था, वे दोनों दूसरे दिन सवेरे पटवारी के इंतज़ार में चौपाल में इकट्ठे हो गये। उन लोगों ने बड़ी देर तक पटवारी का इंतज़ार किया, लेकिन किसी कारण से पटवारी अपने वादे के मुताबिक़ पहुँच नहीं पाया। आखिर झगड़ा करनेवाले दोनों दल के लोग अपने अपने घर चले गये।

पड़ोसी गाँव का पटवारी कभी अपने वचन से मुकरता न था। उसके न आने का कोई बड़ा कारण हो सकता है। गणपत ने सोचा कि सब से पहले वही उस कारण का पता लगा लेगा और गाँववालों को सूचना देगा। यों विचार करके कड़ी धूप में खाने की चिंता तक किये बिना गणपत पटवारी के गाँव की ओर चल पड़ा।

गाँव के बाहर गणपत के सामने से एक लाश आ गुजरी। उसने एक व्यक्ति से

यमुना दत्त

पूछा—"भाई, यह लाश किसकी है? साधारण आदमी की प्रतीत नहीं होती।"

"यह तो इस गाँव के एक बड़े आदमी की लाश है।" उस व्यक्ति ने कहा।

"इस गाँव का सब से बड़ा आदमी कौन है?" गणपत ने फिर पूछा।

"इस गाँव में हमारे पटवारी से बढ़कर कौन बड़ा आदमी है।" पड़ोसी गाँव के व्यक्ति ने जवाब दिया। गणपत ने सोचा, बेचारे इस गाँव का पटवारी मर गया है। इसीलिए आज सुबह पंचायत करने उसके गाँव में नहीं आया।

यह अनोखी खबर अपने गाँववालों को सुनाने के लिए गणपत दौड़े-दौड़े अपने गाँव को लौट आया। सब को बताने लगा—"बेचारे आज सवेरे पड़ोसी गाँव के पटवारी का देहांत हो गया है। इसीलिए वे आज हमारे गाँव में नहीं आये। मैंने उनकी लाश को खुद देखा है।"

पर एक भी व्यक्ति ने उसकी इस अनोखी ख़बर पर यक़ीन नहीं किया। इस पर गणपत को बड़ा दुख हुआ। वह सोचने लगा—'सच्ची बात बताने पर भी लोग उसकी बात पर विश्वास क्यों नहीं करते? सब के मन में यह विश्वास कैसे पैदा करे कि वह सच्ची बात ही बताता है।'

यों विचार कर उसने लोगों को समझाया—"भाइयो, पटवारी की मृत्यु पर

हमारे गाँव के कुछ बुजुर्ग लोगों को जाकर शोक-संताप प्रकट करना ज़रूरी है न? इसलिए आप लोग अभी चलिए, सच्ची बात का पता आप लोगों को लगेगा।"

तिस पर भी किसी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया। कुछ लोगों ने गणपत से पूछा—"तुम बताते हो कि तुमने पटवारी साहब की लाश देखी है। क्या तुमने कभी पटवारी को जिंदा रहते देखा भी है?"

"ऐसे बड़े आदमी के मरने पर उसका समाचार जानने के लिए क्या लाश को पहचानने की भी ज़रूरत है?" गणपत ने उल्टा सवाल किया।

फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। तब उसने सोचा–उसके साथ उसके गाँववाले भी पड़ोसी गाँव के मृत पटवारी के प्रति अन्याय कर रहे हैं। इसलिए उसी गाँव के किसी आदमी को बुलवाकर उसके मुँह से यह खबर सुनवा दे तो तब उसके प्रति गाँववालों की गलत फहमी दूर हो जाएगी।

यों विचार कर गणपत फिर से पड़ोसी गाँव के लिए चल पड़ा। रास्ते में एक बुजुर्ग से उसकी मुलाक़ात हो गई। गणपत ने पूछा–"महाशय, आप तो यक़ीन करेंगे न कि आज सुबह आप के गाँव के पटवारी का देहांत हो गया है?"

"मैं यक़ीन नहीं करूँगा।" उसने कहा।

"क्यों यक़ीन नहीं करते?" गणपत ने आश्चर्य में आकर पूछा।

"क्यों कि मैं ही उस गाँव का पटवारी हूँ।" उस व्यक्ति ने कहा।

गणपत यह जवाब सुनकर अवाक् रह गया। फिर उस दिन सुबह उसके तथा उस गाँव के एक और व्यक्ति के बीच जो वार्तालाप हुआ था उसे सुनाया। इस पर पड़ोसी गाँव के पटवारी ने समझाया–"अचानक आज मेरे गाँव के एक बहुत बड़े धनी आदमी का देहांत हो गया है। इस कारण मैं तुम्हारे गाँव नहीं जा सका, मेरे भी गाँव में तुम जैसा एक आदमी है। वह झूठ बोले बिना इस तरह सुननेवालों को विश्वास करने योग्य झूठ बोलता है। उसने कहा है–मृत व्यक्ति बड़ा आदमी है। गाँव में मुझे सब से बड़ा आदमी बताया है। इन दोनों अर्थों को जोड़कर तुमने सोचा कि मैं ही मर गया हूँ। तुम उसके स्वभाव से परिचित नहीं हो, इसीलिए तुमने उसकी बातों पर यक़ीन किया। पर मेरे गाँव में उसकी बातों पर कोई भी यक़ीन नहीं करते।"

इस पर गणपत का ज्ञानोदय हो गया। झूठ ध्वनित करनेवाला सत्य बतानेवाले पर कोई यक़ीन नहीं करते, तो सत्य जाने बिना ख़बरें फैलानेवाले उस पर कोई नहीं करता तो इसमें आश्चर्य क्या है?

कंस ने वसुदेव को देवकी के साथ कारागार में बंद कर पहरेदारों को पहरे पर बिठाया। देवकी के गर्भ में विष्णु के दस मास पूरे हो गये।

श्रावण कृष्णा अष्टमी का दिन आ पहुँचा, उस दिन रोहिणी नक्षत्र था। कंस घबराकर अपने सेवकों से बोला–"यह तो देवकी का आठवाँ गर्भ है। मेरे लिए बहुत ही खतरनाक है। यही मेरा वध करनेवाला है। उसका वध करने पर ही मैं चैन की नींद सो सकता हूँ। इसलिए तुम लोग अत्यंत सावधान रहो। शिशु के जन्म के होते ही मुझे सूचना दो।" यों कहकर कंस अपने महल को लौटा, लेकिन उसका मन बहुत ही अशांत था।

सिपाही हथियार धारण कर बड़ी सावधानी के साथ पहरा दे रहे थे।

उस वक़्त देवकी ने वसुदेव से यों कहा: "मेरा प्रसव होने जा रहा है। हमारे चारों तरफ़ राक्षस पहरा दे रहे हैं। इसके पूर्व मैंने और नंद की पत्नी यशोदा ने हमारे बच्चों को बदलने का इंतज़ाम कर रखा है। मगर यह कैसे मुमकिन होगा?"

ये बातें देवकी कह ही रही थी कि उसे प्रसव की पीड़ा शुरू हो गई। उसने एक शिशु का जन्म दिया। वह शिशु बड़ा सुंदर था। देवकी ने अपने पति को निकट बुलाकर शिशु को दिखाते हुए कहा–"इस शिशु के चेहरे की कांति, इसके विशाल नेत्र और इसकी देह को तो

में ले जाकर यशोदा के घर में छोड़ आओ।"

यह वाणी सुनकर वसुदेव ने शिशु को अपने हाथों में लिया, बंधनों से मुक्त हो खुले हुए आठ द्वारों को पार कर योग माया के प्रभाव से किसी की नज़र में पड़े बिना तेजी के साथ कालिंदी नदी के किनारे पहुँचे और सोचने लगे—"मैं इस नदी को कैसे पार करूँ?" तभी नदी का पानी कटि तक के बराबर घट गया। वसुदेव तेज गति से गोकुल पहुँचे और उस निर्जन पथ से जाकर नंद के घर पहुँचे।

उसी वक़्त नंद की पत्नी यशोदा के गर्भ से योग माया पुत्री के रूप में पैदा हुई। यशोदा ने अपनी बच्ची को वसुदेव के हाथ दिया और उनके पुत्र को पालने के हेतु अपने हाथों में ले लिया। वसुदेव ने उस बच्ची को कारागृह में लाकर देवकी की बगल में लिटाया और चिंतापूर्ण चेहरा लिये बैठे रहे।

देख लो! क्या कहीं किसी के यहाँ ऐसा शिशु पैदा हो सकता है? कहा जाता है कि जो शिशु ज़िंदा नहीं रहता, वह ज़्यादा सुंदर होता है। क्या यह बात झूठ हो सकती है? इसे अपने हाथों में ले जाकर मारने के लिए तुम कंस के हाथ कैसे सौंप सकते हो?"

वसुदेव ने उस शिशु को देखा, वह देखते ही रह गये। उसी वक़्त आकाश वाणी यों सुनाई दी:

"सारे पहरेदार मेरी माया के कारण गहरी नींद सो रहे हैं। कारागृह के सारे दर्वाजे खुले हुए हैं। तुम्हें रोकनेवाला कोई नहीं है। इस शिशु को तुम गोकुल

उस वक़्त छोटी सी बच्ची मंद-मंद रोने लगी। पहरेदार घबराकर जाग उठे, उसी वक़्त कंस के पास जाकर सूचना दी कि देवकी का प्रसव हो गया है। कंस दौड़ा-दौड़ा आ पहुँचा और वसुदेव से बोला—"बहनोईजी, यह तो अष्टम गर्भ है। सुना है कि साक्षात् विष्णु ही मेरा

वध करने के लिए इस बार जन्म ले रहा है। उस दुष्ट का वध करना है न? ले आइये।"

वसुदेव ने भय का अभिनय करते उस शिशु को कंस के हाथ दिया, कंस उसे देख शंका करते हुए अपने मन में सोचने लगे–"यह तो बड़ा ही विचित्र मालूम होता है। आकाशवाणी की बात कैसे झूठ हो सकती है? यह क्या जादू तो नहीं है? जब चारों ओर पहरा है, तब लड़की कैसे यहाँ आ गई?" यों घबराते हुए उस शिशु के पैर पकड़कर कंस ने उसे पत्थर पर दे मारा।

मगर वह बच्ची कंस के हाथों से खिसक गई, उड़कर देवता की आकृति धारण कर कोमल स्वर में बोली–"अरे दुष्ट, मेरा वध करने से क्या होनेवाला है? तुम्हारा वध करनेवाला वीर जन्म धारण करके बढ़ रहा है। वह निश्चय ही तुम्हारा वध करेगा।" यों कहकर वह अदृश्य हो गई।

कंस को लगा कि वह पागल होता जा रहा है। उसने अपने महल में लौटकर अपने हितैषी बक, धेनुक, वत्सक, प्रलंब आदि से यों कहा: "सुनो, गोकुल या और स्थानों में अभी अभी पैदा हुए बच्चों को निर्दयतापूर्वक तुम लोग मार डालो। तुम लोग मेरे प्राणों की रक्षा के वास्ते सतर्क रहो। बच्चों को मारनेवाली पूतना तुम लोगों की सहायिका रहेगी।"

सवेरा हुआ। नंद ने पुत्र-जन्म पर उत्सव की तैयारी की। यह खबर चारों तरफ़ फैल गई। कंस के अनुचरों ने यह खबर उसके कानों में डाल दी। पहले नारद के द्वारा यह समाचार कंस को मिल ही गया था, इसलिए उसने सब से पहले गोकुल पर अपना क्रोध केन्द्रित किया।

गोकुल में पलनेवाले कृष्ण ने पहले पूतना को मार डाला। इसके बाद असाधारण शक्तिशाली धेनुक, वत्सक, बक और प्रलंब उनके हाथों में मर गये। कृष्ण ने गायों की रक्षा के लिए पर्वत को

उठाया, इन सब समाचारों के द्वारा कंस को यह स्पष्ट मालूम हो गया कि उसकी मौत कृष्ण के हाथों में निश्चित है। इसके बाद केशि नामक राक्षस के भी कृष्ण के हाथों में मरने की खबर मिली।

अब कंस ने युक्तिपूर्वक कृष्ण का वध करने का निर्णय किया। धनुर्याग की घोषणा करके उसमें कृष्ण और बलराम को निमंत्रित करने का निश्चय किया। उन्हें लिवा लाने के लिए रथ पर अक्रूर को गोकुल में भेजा।

बलराम और कृष्ण मथुरा नगर में पहुँचे। धनुष को देखा, सभी राजाओं को हराया। हाथी का संहार किया, चाणूर, मुष्टिक, शल और तोशल का वध किया। कंस के केश पकड़कर नीचे खींचकर मार डाला। अपने माता-पिता को कारागार से विमुक्त करके उग्रसेन को राजा बनाया।

इसके बाद वसुदेव ने बलराम और कृष्ण का उपनयन करवाकर सांदीपन के पास विद्याभ्यास करने भेजा। बारह वर्षों के पूरा होते होते दोनों ने गुरुकुल में समस्त विद्याएं सीख लीं।

इस बीच जरासंध ने अपने जामाता कंस के वध का वृत्तांत जानकर मथुरा नगर पर आक्रमण किया और भयंकर युद्ध करके उसमें बुरी तरह से हारकर वापस चला गया। इसके बाद जरासंध ने सात बार कृष्ण के साथ युद्ध किया और साथ ही म्लेच्छ राजा कालयवन को भी कृष्ण पर उकसाया। कालयवन भी मथुरा पर हमला कर बैठा।

इस पर कृष्ण ने यादवों को बुलाकर समझाया–"दुष्ट जरासंध ने इस बार इस कालयवन को हम पर हमला करने भेजा है। यह महान बलवान है। इसकी सेना बड़ी भारी है। इस दुष्ट के साथ युद्ध करना कठिन है। इसलिए हमें अपने प्राणों और संपत्ति की रक्षा करने के लिए घर छोड़ना पड़े तो कोई बुरी बात नहीं है। हम लोग जिस प्रदेश में सुरक्षित रह

सकते हैं, उसी को हमारी पैतृक संपत्ति माननी चाहिए। बुजुर्गों का कहना है कि जब शाश्वत रूप से खतरा उत्पन्न होता है, तब जंगलों और पहाड़ों में जाकर सुख पूर्वक जीना कहीं उत्तम है। भय के कारण ही तो विष्णु समुद्र के मध्य भाग में शेष नाग पर शयन करते हैं। जब उनकी हालत ऐसी है, बाक़ी लोगों की बात कहने की क्या आवश्यकता है? इसलिए मुझे लगता है कि हम लोग इसी वक़्त मथुरा नगर को छोड़कर द्वारकापुरी में पहुँच जायें और वहाँ पर सुख की जिंदगी जीना कहीं उत्तम है। द्वारकापुरी रैवतक पर्वत के समीप में समुद्र तट पर है। गरुड़ ने हमें बताया था कि वह अत्यंत सुंदर नगरी है।"

कृष्ण के इस सुझाव को सभी यादवों ने मान लिया। वे सब अपने-अपने परिवारों को साथ ले कृष्ण और बलराम के साथ चल पड़े। थोड़े समय बाद द्वारका पहुँचे। वहाँ पर उजड़े हुए घरों की मरम्मत करके उनमें निवास करने लगे। इस कारण मथुरा नगर निर्जन हो गया। मगर फिर से बलराम और कृष्ण मथुरा को लौट आये। उन्हीं दिनों में कालयवन ने मथुरा पर आक्रमण किया।

उस वक़्त कृष्ण मथुरा को छोड़ भागने लगे। इसे देख कालयवन ने उनका पीछा किया। दोनों आखिर मुचिकुंद नामक मुनि के आश्रम में पहुँचे। कृष्ण उस आश्रम में जा छिपे। तब कालयवन ने जाकर सोनेवाले मुचिकुंद पर लात मारी। मुनि जाग उठे। क्रोध में आकर अपनी क्रोध दृष्टि से कालयवन को भस्म किया।

इसके बाद कृष्ण और बलराम द्वारका को लौट आये। उग्रसेन के शासन में सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगे।

इसके थोड़े दिन बाद जब रुक्मिणी अनिच्छापूर्वक शिशुपाल के साथ विवाह करने की स्थिति में थी, तब कृष्ण ने उसकी रक्षा करके राक्षस विधि से रुक्मिणी के साथ विवाह किया। कालांतर में

जांबवती, मित्रविंदा, सत्यभामा, नाग्नजिती, लक्षणा और कालिंदी भी कृष्ण की पत्नियाँ बनीं।

समय बीतता गया। कृष्ण के द्वारा रुक्मिणी ने प्रद्युम्न नामक पुत्र का जन्म दिया। उस शिशु के नामकरण के बाद शंबर नामक एक राक्षस उस शिशु को उठा ले गया और अपनी पुत्री मायावती के हाथ सौंप दिया।

श्रीकृष्ण से कुछ करते न बना, तब उन्होंने जगदंबा का ध्यान करके यों कहा: "हे माते! अदृश्य रूप में आकर कोई मेरे बच्चे को उठा ले गया है। मेरी इज्जत धूल में मिलती जा रही है। मैं आप का दास हूँ। इस हालत में मेरा रहना क्या आप के लिए भी अपमान की बात नहीं है? नगर के बीच मेरा निवास में है। नगर के चारों तरफ़ क़िला है, मेरे निवास के चतुर्दिक पहरा है, ऐसी हालत में शिशु कैसे गायब हो गया? यह सब मेरा प्रारब्ध नहीं तो और क्या है? मेरे नगर से बाहर जाने पर भी सारे यादव सतर्क हैं। आप के माया-बल के बिना मेरे पुत्र को कौन उठा ले जा सकता है? आपने मुझे पुत्र प्रदान कर आनंद पहुँचाया, ऐसी हालत में मुझे यह मानसिक व्यथा पहुँचाना क्या उचित है? मेरे पुत्र को फिर से मुझे दिलाइये।"

इस प्रकार चिंता करनेवाले कृष्ण के सामने देवी ने प्रत्यक्ष होकर कहा—"शापवश आप का पुत्र शंबर राक्षस के द्वारा अपहरण किया गया है, वह उसी के घर पर है। वह सोलह साल की उम्र में शंबर का वध करके आप के पास लौट आएगा। इसलिए आप चिंता न करें।"

इस प्रकार देवी का आश्वासन पाकर श्रीकृष्ण और रुक्मिणी शांत हो गये।

नारायण के अंश से पैदा हुए श्रीकृष्ण की आँख बचाकर रहस्यपूर्ण कमरे में रहनेवाले शिशु का अपहरण शंबर कैसे कर पाया? इसमें आश्चर्य की कोई बात
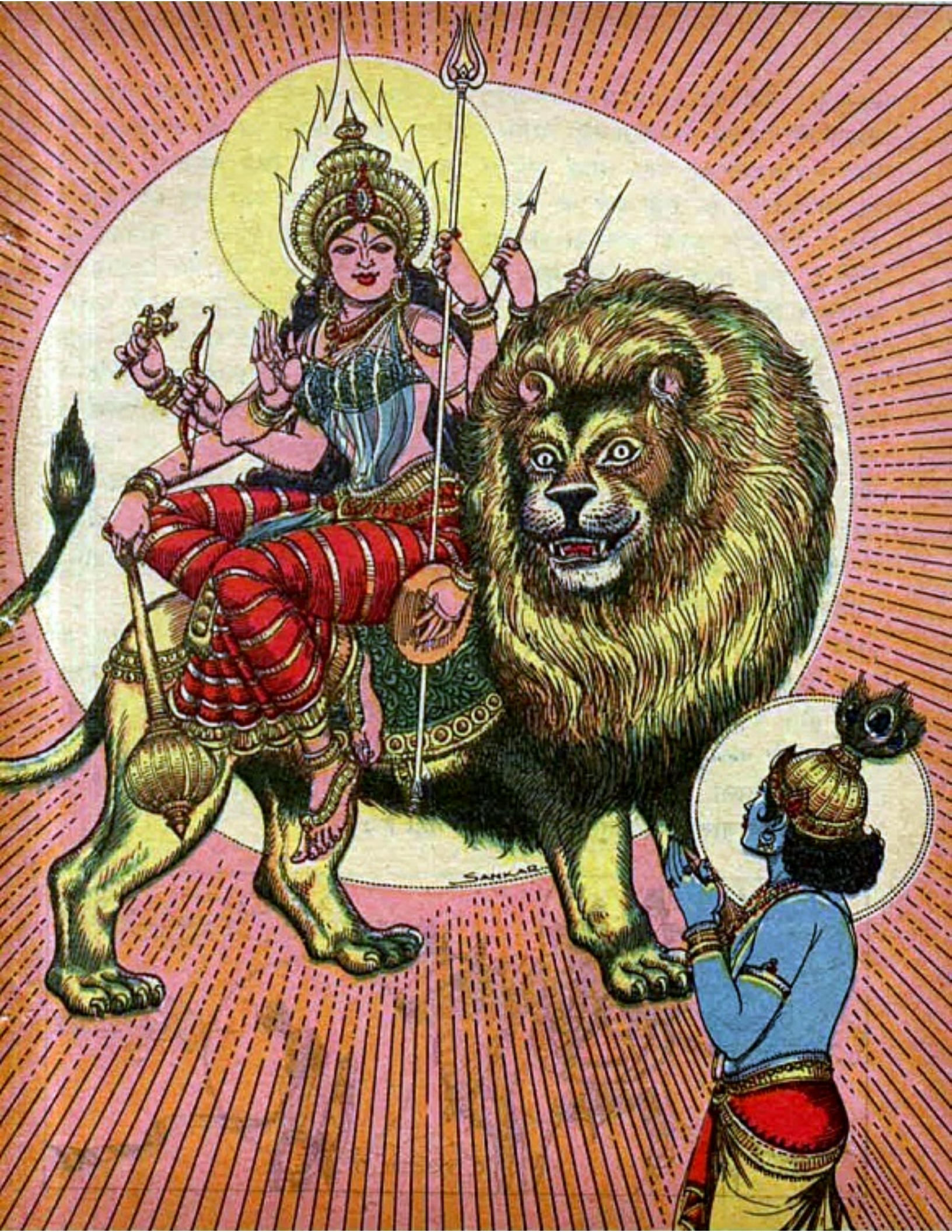
नहीं है। देवी की माया को मानव क्या, देवता और राक्षस भी समझ नहीं पायेंगे। क्या रामचन्द्रजी यह बात समझ पाये थे कि दण्डकारण्य में उन्हें सोने का हिरण दिखाई देगा और उनकी पत्नी का अपहरण होगा? उन्हें अपने पिता की मृत्यु का समाचार किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा ही तो मिल गया था? आखिर श्रीरामचन्द्र यह भी समझ न पाये कि सीताजी अमुक जगह पर हैं। उनके पुत्र कुश-लव का परिचय वाल्मीकि द्वारा ही तो उन्हें मालूम हुआ था, तब तक वे समझ न पाये थे न?

मानव का शरीर धारण करने पर मानवोचित धर्म सब के लिए समान हैं। यही कारण है कि कृष्ण भी जन्म के साथ कंस के डर से गोकुल में जा छिपे थे। बड़े होने पर भी जरासंध के डर से द्वारका में चले गये थे। शिशुपाल की पत्नी बननेवाली रुक्मिणी को कृष्ण के द्वारा उठा ले जाना क्या अनुचित नहीं है?

श्रीकृष्ण ने भी अनेक मानवोचित कार्य किये हैं। अपनी पत्नी सत्यभामा को संतुष्ट करने के लिए श्रीकृष्ण स्वर्ग से पारिजात वृक्ष को उठा लाये और इन्द्र के साथ उन्होंने युद्ध किया। जांबवती ने जब पुत्रों की कामना की, तब उन्होंने पुत्र पाने के विचार से मुनि उपमन्यु के आश्रम में जाकर तप किया था। इस वास्ते उन्होंने पाशुपत दीक्षा पाकर शिवजी के प्रति तपस्या की, तब शिवजी ने पार्वती के साथ प्रत्यक्ष होकर श्रीकृष्ण की कामना को जान लिया और आशीर्वाद दिया था– "आप के तो सोलह हज़ार पचास पत्नियाँ होंगी। प्रत्येक के दस बच्चे पैदा होंगे। आप सौ साल जीयेंगे।"

इसके बाद श्रीकृष्ण ने उपमन्यु को प्रणाम किया, उनसे विदा लेकर द्वारका पहुँचे और सुखपूर्वक अपने दिन बिताये।

इसलिए महादेवी को छोड़ माया के अधीन न होनेवाला व्यक्ति कोई भी नहीं है।

चीनांशुक

तीन हज़ार साल पहले चीन के एक चक्रवर्ती ने एक सुंदर युवती के साथ विवाह किया। उसका नाम सीलिंग षी था। उसकी उम्र चौदह साल की थी। चीन के चक्रवर्ती की पट्ट महिषी सीलिंग षी को किसी बात की कमी न थी। दिन भर उसका मनोरंजन करने के लिए गायक और नर्तक हाजिर रहते थे। उसकी सेवा के लिए अनेक परिचारिकाएँ थीं।

इन सब के बावजूद भी सीलिंग षी बड़ी दुखी रहा करती थी। उसकी आँखों से सदा आँसू बहा करते थे। उसके दुख को दूर करने के लिए कई लोगों ने प्रयत्न किया, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। उसके दुख का यही कारण था कि वह अपने पीहर को छोड़ कभी बाहर नहीं गई थी। तिस पर वह छोटी-सी उम्र की थी। दूर पर रहनेवाले अपने माता-पिता और भाइयों की याद करते हुए वह हमेशा चिंतित रहा करती थी।

अपनी पट्टमहिषी के दुखी रहने का समाचार मिलते ही चक्रवर्ती अपने दो मंत्रियों के साथ उद्यान वन में आये। शहतूत के पेड़ की छाया में बैठी अपनी रानी के समीप जाकर चक्रवर्ती ने पूछा—"रानी, तुम्हें किस बात की कमी है? तुम्हारे कोमल कपोल गीले क्यों हैं? क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है? तुम साफ़-साफ़ बतला दो।"

"महाराज, मुझे किसी बात की कमी नहीं है। आप कृपया चिंता न कीजिए। मेरे मन में उत्साह नहीं है, बस, इससे बढ़कर कोई विशेष बात नहीं है।" सीलिंग षी ने कहा।

इस पर चक्रवर्ती ने अपने मंत्रियों की ओर देख कहा—"आप लोग महारानी के

२५ साल पहले की चन्दामामा की कहानी

मन में उल्लास पैदा करनेवाला कोई उपाय सोचिये।" यों कहकर चक्रवर्ती वहाँ से चले गये।

उसी समय परिचरिकाओं ने चाय लाकर महारानी के सामने रखा। उसने रिवाज़ के अनुसार खुद प्यालों में चाय बनाई और गायक तथा नर्तकों को दिया, तब अपना प्याला अपने सामने रख लिया। शायद चाय ज्यादा गरम थी या उस वक़्त चाय पीने की उसकी ज्यादा इच्छा न थी, इस कारण महारानी ने उसी वक़्त चाय नहीं पी।

उस वक़्त शहतत के पेड़ पर से कोई चीज़ आकर महारानी के चाय के प्याले में आ गिरी। चाय ढुलक गई और महारानी के क़ीमती वस्त्रों पर छितर गई। परिचारिकाएँ तड़प उठीं और महारानी के समीप जाने को हुईं।

"तुम लोग मेरे वस्त्रों की चिंता न करो, पर देखो, प्याले में कौन चीज़ गिर पड़ी है?" महारानी ने कहा।

परिचारिकाओं ने प्याले की चाय में से छोटे से धागे के लच्छे जैसे पदार्थ को निकालकर महारानी के हाथ पर रख दिया। वह और कोई चीज़ न थी, रेशम के कीड़े शहतूत के वृक्षों पर जो अण्डे देते हैं, उसका फल था। ऐसे फल शहतूत के वृक्ष पर और अनेक थे।

चाय में गिरे शहतूत के फल को जब महारानी ने परिचारिकाओं के हाथ से लिया, तब सीलिंग षी को एक विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा। वह फल फट गया और उसमें से बहुत ही पतले और चमकदार धागों के लंबे-लंबे तार उसके हाथ में आने लगे।

महारानी ने सोचा—"ओह! अगर यही धागा है तो इससे बुने जानेवाले वस्त्र कैसे सुंदर हो सकते हैं!"

दूसरे ही क्षण उसके मन में एक विचार आया। ये धागे तो बहुत ही पतले जरूर हैं, मगर ये आसानी से टूटते नहीं, अलावा

इसके इस एक फल के अन्दर कितने ही हज़ार गज लंबे तार हैं। इन तारों को मिलाकर बटने से धागा बनेगा। तब उसे करघे पर बुनकर ऐसे वस्त्र तैयार किये जा सकते हैं, जैसे सुंदर वस्त्र आज तक इस संसार के किसी व्यक्ति ने देखा तक न हो।

इस विचार के आते ही महारानी के मन की चिंता जाती रही। वह उत्साह में आ गई, अपनी परिचारिकाओं को बुलाकर अपने हाथ के तार को खोलकर बटने को कहा। उन लोगों ने पतले व चमकदार धागा बटकर तीलियों में लपेट दिया।

इस पर महारानी बोली–"इस प्रकार कितना धागा होने से एक वस्त्र बन सकता है? तुम सब जाकर शहतूत के पेड़ के सारे फल लाकर चाय में डाल दो।"

इसके बाद किसी को भी पल-भर भी फ़ुरसत न मिली। इसके पहले बेकार बैठकर महारानी प्रत्येक पल को एक युग के बराबर बिता देती थी, अब अनेक घड़ियाँ क्षणों के बराबर बीतने लगीं। सूर्यास्त के पहले धागे के कई लच्छे तैयार हो गये। वस्त्र तैयार करने के लिए महारानी को बहुत काम करना था। इसलिए उसने बढ़इयों को बुलाकर आदेश दिया–"लो, तुम लोग यह धागा देख लो। ऐसे पतले धागे को बुनने के लिए तुम लोग करघा तैयार करो। सवेरा होने के पहले करघा मेरे कमरे में पहुँचा दो।"

दूसरे दिन चक्रवर्ती ने अपने मंत्रियों को बुलाकर पूछा–"आप लोगों ने महारानी को प्रसन्न रखने के लिए क्या क्या उपाय सोचा है?"

एक मंत्री गुनगुनाने लगा–"महाराज! एक सुंदर मोर को पकड़ लाकर उद्यान में रखे तो महारानीजी उसके नृत्य को देख, उसके परों के रंगों को देख अपना मनोरंजन..."

तब चक्रवर्ती ने दूसरे मंत्री की ओर देखा। दूसरे मंत्री ने बताया–"सम्राट! हमारे उद्यान में जल-क्रीड़ाएँ करने के हेतु कमलों से भरा एक तालाब बनवा लिया जाय तो उसमें तैरते महारानी..."
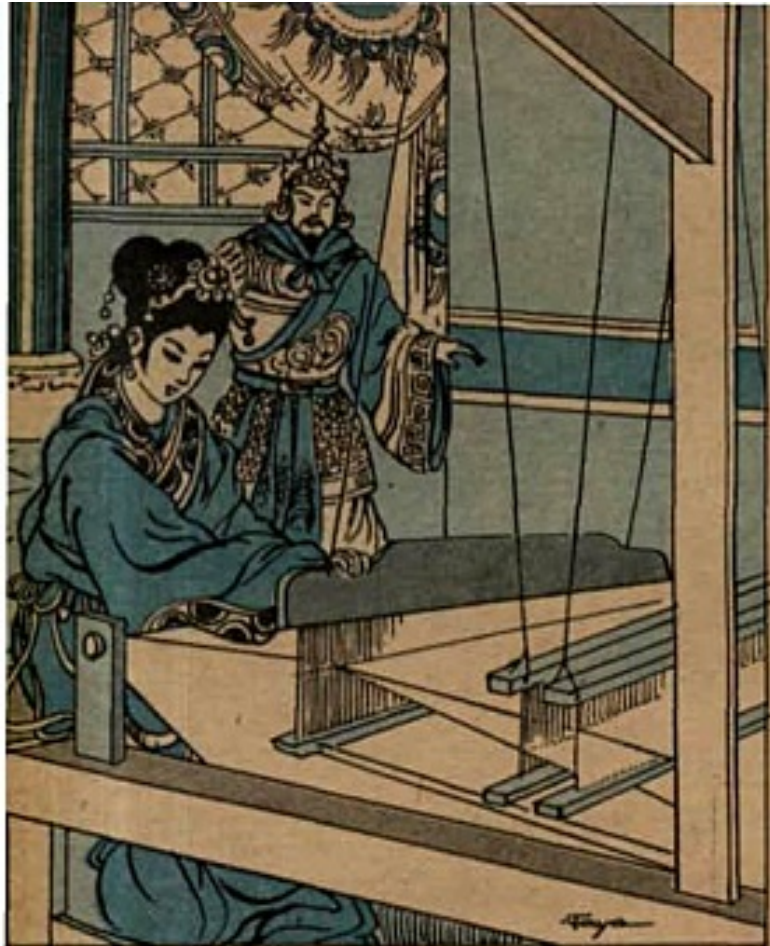
चक्रवर्ती को लगा कि उनके दोनों मंत्रियों के सुझाव ठीक नहीं हैं, तब उन्होंने महारानी को बुला लाने का अपने सेवकों को आदेश दिया।

सेवकों ने बताया–"महाराज! महारानी अभी तक अपने कमरे से बाहर नहीं आई हैं।"

"अरे, सूरज के उगे काफी देर हो गई है, दुपहर होने को भी हुई है। क्या अभी तक महारानी कमरे से बाहर नहीं आई हैं? क्या वह कहीं बीमार तो नहीं हैं?" चक्रवर्ती ने उत्सुकता पूर्वक पूछा। उन्हें अपनी प्रिय पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता सताने लगी। वे उसी वक़्त गद्दी से उतर पड़े और सीधे महारानी के कमरे में पहुँचे। चक्रवर्ती ने कमरे में क़दम रखते ही जो दृश्य देखा, उससे उनके आश्चर्य और आनंद की कोई सीमा न रही।

महारानी चिंतित तो न थी, उल्टे एक अनोखे करघे के सामने बैठकर अद्भुत धागों से चमकनेवाले नाज़ुक वस्त्र बुन रही है।

चक्रवर्ती को अचानक अपने कमरे में प्रवेश करते देख महारानी ने उनकी ओर सिर उठाकर देखा। उसकी आँखें आनंद के मारे चमक रही थीं। वह मुस्कुराकर बोली–"महाराज, मैंने अपनी व्यक्तिगत

चिंता की वजह से आप को आज तक दुख पहुँचाया, इसके लिए मैं आप से क्षमा चाहती हूँ। उसके बदले में मैं आप के वास्ते यह देवता वस्त्र बुनकर दे रही हूँ। आप नाराज़ न होंगे न?"

"नाराज़? ऐसे अपूर्व और अद्भुत वस्त्र को पुरस्कार के रूप में पाते हुए क्या मैं नाराज़ हो सकता हूँ?" चक्रवर्ती ने कहा।

इसके बाद सीलिंग षी ने अपने पति को सारा वृत्तांत सुनाकर कहा–"महाराज! आप की रानी बनकर यह कार्य करना शायद उचित नहीं है; इसीलिए मैंने इसे गुप्त रखा।"

"इसकी मुझे चिंता नहीं है, तुम्हारे मन को प्रसन्न करनेवालों को मैं अपना आधा राज्य भी देने को तैयार हो गया था। तुम्हारी चिंता दूर हो गई है। इससे बढ़कर और मुझे चाहिए ही क्या?" चक्रवर्ती ने कहा।

"तब तो महाराज! मेरी एक इच्छा की पूर्ति कीजिए।" महारानी ने पूछा।

"तुम तुरंत अपनी इच्छा बतला दो।" चक्रवर्ती ने कहा।

"एक हज़ार शहतूत के वृक्षोंवाला एक बाग मेरे वास्ते लगवाइये।" महारानी ने पूछा। इस पर चक्रवर्ती ने उसकी इच्छा की पूर्ति की।

इसके बाद सीलिंग षी ने संसार में सर्व प्रथम रेशमी वस्त्र बुने। आज भी चीन की भाषा में 'सी' का अर्थ रेशमी होता है। महारानी के अनंतर भी चीन देश की महारानियाँ उस संप्रदाय के अनुसार प्रति वर्ष एक दिन रेशमी कीड़ों को अपने हाथों से आहार देती हैं।

कालांतर में रेशमी वस्त्रों का रहस्य चीन देश से और देशों पर भी खुल गया। इसीलिए हमारे पूर्वज रेशमी वस्त्रों को चीनांशुक कहा करते थे। अन्य देशों में रेशमी वस्त्रों के तैयार होते रहने पर भी चीन देश के रेशमी वस्त्रों का अपना अलग महत्व है। इन्हें हमारे देश के लोग चीनी चीनांशुक कहा करते हैं।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां जनवरी १९८० के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

Ravindra S. Kamboj

★

Prabu Sankar

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ नवम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

सितम्बर के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो: मानो तो भगवान!

द्वितीय फोटो: नहीं तो पत्थर!!

प्रेषक: नीता कर्णे, २१७, रास्ता पेठ, पूना - ११

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

हुर्रे
असोका ग्लूकोज
मिल्क बिस्कुट!
Asoka
Glucose
MILK BISCUITS
Asoka
एक नयी ताजगी का अनुभव.
जिन्दगी का भरपूर मजा.
कुरकुरे, असोका ग्लूकोज मिल्क बिस्कुटों
का आनन्द लीजिए.
विद्युतीय नियन्त्रण से पूर्ण आधुनिक जर्मन
प्लान्ट में स्वास्थ्यकारी गुणों से निर्मित.
दिलकश और ताजे शक्ति से परिपूर्ण
आज ही अपने परिवार के लिए एक पैकिट खरीदिये !
BREEZE
हर पल
असोका
के साथ
असोका बिस्किट्स हैदराबाद आ. प्र.
असोका क्रेस्पो तथा क्रेस्पोक्रेक के निर्माता